दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 04-02-2022

आजादी के अमृत महोत्सव के तहत शहीदों को नमन किया

शहीदों पर विचार व्यक्त करते हुए।

साल्हावास | आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी सुहासिनी गांगुली के 113 वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष सेमीनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि क्रांतिकारियों की 'दीदी' नाम से प्रसिद्ध सुहासिनी गांगुली एक ऐसी गुमनाम नायिका थीं जिन्होंने देश की आजादी की खातिर अपना सर्वस्य न्योछावर कर दिया था। सुहासिनी गांगुली का जन्म 1909 में खुलना, बांग्लादेश में हुआ था। प्रारंभ में कोलकाता के एक मूक बधिर बच्चों के स्कूल में अध्यापिका के रूप में कार्य किया और 1924 में क्रांतिकारियों के शहर कोलकाता आने से उनकी जिंदगी का मकसद केवल भारत की आज़ादी ही बन गया। अंग्रेजी हुकूमत को हराने के लिए क्रांतिकारी रस्सिक लाल दास से मिलकर क्रांतिकारी संगठन जुगांतर पार्टी से जुड़ी।

नाम गुप्त सहित हुए गांवों के लोगों गांवों के प्रतिनिधि शामिल हुए।

दैनिक जागरण, झज्जर 4.2.22

सुहासिनी गांगुली के जन्मोत्सव पर बिरोहड़ कालेज में सेमिनार

संवाद सूत्र, साल्हावास : राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वाधान में महान क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी सुहासिनी गांगुली के 113 वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष सेमिनार का आयोजन किया गया। संयोजक और मुख्य वक्ता डा. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि क्रांतिकारियों की 'दीदी' नाम से प्रसिद्ध सुहासिनी गांगुली एक ऐसी गुमनाम नायिका थीं। जिन्होंने देश की आजादी की खातिर अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। प्रारंभ में उन्होंने कोलकाता के एक मूक बधिर बच्चों के स्कूल में अध्यापिका के रूप में कार्य किया और 1924 में क्रांतिकारियों के शहर कोलकाता आने से उनकी जिंदगी का मकसद केवल भारत की आज़ादी ही बन गया। सुहासिनी का घर क्रांतिकारियों के लिए उसी तरह से पनाह का ठिकाना बन गया था, जैसे लंदन में भीखाजी कामा का घर कभी वीर सावरकर के लिए था। सुहासिनी ने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया और इसी कारण उनको गिरफ्तार करके 1942 में जेल भेज दिया गया, जहां से 1945 में इन्हें रिहा किया गया। 1965 में एक दुर्घटना में घायल होने पर इनका निधन हो गया था। महिलाओं को क्रांतिकारी आन्दोलन से जोड़ने में इन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गणित के सहायक प्रोफेसर डा. नरेन्द्र सिंह ने कहा कि देश की लड़कियों को विशेष रुप से सुहासिनी गांगुली से प्रेरणा लेनी चाहिए कि भारत की लडकियां किसी से भी कम नहीं है।

अमर उजाला, चरखी दादरी 4.2.22

आजादी में सुहासिनी गांगुली का अहम योगदान

स्वतंत्रता सेनानी सुहासिनी गांगुली को जयंती पर किया नमन

सेमिनार में बोलते संयोजक और मुख्य वक्ता इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप। संवाद

माई सिटी रिपोर्टर

चरखी दादरी। आजादी के अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी सुहासिनी गांगुली के 113वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष सेमीनार का आयोजन किया गया।

सेमिनार के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि क्रांतिकारियों की दीदी नाम से प्रसिद्ध सुहासिनी गांगुली एक ऐसी गुमनाम नायिका थीं, जिन्होंने देश की आजादी की खातिर अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया था। उनका जन्म 1909 में खुलना, बांग्लादेश में हुआ था। प्रारंभ में कोलकाता के एक मूक बधिर स्कूल में अध्यापिका के रूप में कार्य किया। 1924 में क्रांतिकारियों के शहर कोलकाता आने से उनकी जिंदगी का मकसद केवल भारत की आजादी ही बन गया। अंग्रेजी हुकूमत को हराने के लिए क्रांतिकारी रसिक लाल दास से मिलकर क्रांतिकारी संगठन जुगांतर पार्टी से जुड़ी।

सुहासिनी का घर क्रांतिकारियों के लिए उसी तरह से पनाह का ठिकाना बन गया था, जैसे लंदन में भीखाजी कामा का घर कभी वीर सावरकर के लिए था। हेमंत तरफदार, गणेश घोष, जीवन घोषाल, लोकनाथ बल जैसे तमाम क्रांतिकारियों को समय समय पर पुलिस से बचने के लिए उनकी शरण लेनी पड़ी थी। सुहासिनी ने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया और इसी कारण उनको गिरफ्तार करके 1942 में जेल भेज दिया गया। वहां से 1945 में इन्हें रिहा किया गया। 1965 में एक दुर्घटना में घायल होने पर इनका निधन हो गया था।

इतिहास प्राध्यापक जितेन्द्र ने कहा कि सुहासिनी गांगुली ने क्रांतिकारी आंदोलन को एक नई दिशा दी और महिलाओं को क्रांतिकारी आंदोलन से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गणित के सहायक प्रोफेसर डॉ. नरेंद्र सिंह ने कहा कि देश की लड़कियों को विशेष रुप से सुहासिनी गांगुली से प्रेरणा लेनी चाहिए।

62. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special Seminar on 100 Anniversary of Chaura Chauri Incidence and 131st Birth Anniversary of Great Freedom Fighter M.A. Ayyangar on 04.02.2022 and delivered 2 keynote addresses on "Importance of Chaura Chauri Incidence in Indian Freedom Struggle" and "Role of M.A. Ayyangar in Independence Movement".

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 05-02-2022

दैनिक भास्कर झज्जर . बहादुरगढ़ . बेरी . बादली . स

कार्यक्रम • अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में कार्यक्रम

महान स्वतंत्रता सेनानी एमएम आयंगार के 131वीं जयंती के अवसर पर हुआ सेमीनार

भास्कर न्यूज | झज्जर

अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता संग्राम की महान घटना की 100वीं वर्षगांठ एवं महान स्वतंत्रता सेनानी की 131वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष सेमीनार का आयोजन किया गया। सेमिनार के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि चौरा चौरी की घटना ने आजादी के संग्राम में नए युग का आगाज किया। भारत के युवा अब अंग्रेजों से डरकर नहीं बल्कि डटकर सामना करने लगे। चौरा चौरी वास्तव में दो अलग-अलग गांवों-चौरी और चौरा का सम्मिलित क्षेत्र हैं जिसे ब्रिटिश भारतीय रेलवे के एक ट्रैफिक मैनेजर ने इन गांवों का नाम एक साथ किया था और जनवरी 1885 में यहां एक रेलवे स्टेशन की स्थापना की थी। जिस थाने को 4 फरवरी 1922 को जलाया गया था, वो चौरा गांव में ही था। महात्मा गांधी ने 1920 में ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ असहयोग आन्दोलन चलाकर एक साल के अंदर स्वराज मिलने का नारा दिया था।

महान स्वतंत्रता सेनानी एमएम आयंगार के 131 वीं जयंती के अवसर पर विचार रखते हुए।

पुरे भारत से लोगों ने भारी संख्या में भाग लिया। इसमें चौरा चौरी का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। चौरी चौरा कस्बे में 4 फरवरी 1922 को स्वयंसेवकों ने बैठक की और जुलूस निकालने के लिए पास के मुंडेरा बाज़ार को चुना गया। जब सत्याग्रही थाने के सामने से जुलूस की शक्ल में गुजर रहे थे तब तत्कालीन थानेदार गुप्तेश्वर सिंह ने जुलूस को अवैध घोषित कर दिया और पुलिसकर्मियों ने जुलूस को रोकने के लिए बल का प्रयोग किया। स्वयंसेवकों ने इसका विरोध किया तो पुलिस और स्वयंसेवकों के बीच झड़प हो गई। पुलिस ने भीड़ पर गोली चला दी, जिसमें 11 सत्याग्रही मौके पर ही शहीद हो गए और कई घायल हो गए। इससे सत्याग्रही आक्रोशित हो गए। गोली खत्म होने पर पुलिसकर्मी थाने की तरफ भागे। फायरिंग से भड़की भीड़ ने उन्हें दौड़ा लिया। पुलिसवालों ने थाने के दरवाजे बंद कर लिए और थाने के अंदर छिप गए। प्रदर्शनकारियों ने सुखी लकड़ियां, कैरोसिन तेल की मदद से थाना भवन को आग लगाई। जिसमें 22 पुलिसकर्मियों की जिन्दा जलने से मृत्यु हुई थी। चौरीचौरा काण्ड के लिए पुलिस ने कई लोगों को अभियुक्त बनाया। गोरखपुर सत्र न्यायालय के न्यायाधीश मिस्टर एचई होल्मस ने 9 जनवरी 1923 को 172 अभियुक्तों को मौत की सजा का फैसला सुनाया। बाद में इलाहाबाद हाईकोर्ट में अभियुक्तों की तरफ से अपील के बाद इसकी पैरवी पंडित मदन मोहन मालवीय ने की और 151 लोगों को फांसी की सजा से बचाने में सफल रहे। 4 फरवरी 1881 को आंध्रप्रदेश में जन्मे आयंगार ने असहयोग आन्दोलन के दौरान वकालत छोड़कर आजादी के आन्दोलन में भाग लिया। भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया और आजादी के बाद प्रथम लोकसभा के उपाध्यक्ष बने तथा दूसरी लोकसभा के अध्यक्ष चुने गए। इस विशेष सेमिनार में सवीन, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल सिंह इत्यादि उपस्थित रहे।

सेमिनार

चौरा-चौरी की घटना की 100वीं वर्षगांठ पर कार्यक्रम, स्वतंत्रता सेनानी एमए अयंगार को किया नमन, इतिहास विभागाध्यक्ष बोले-

चौरा-चौरी की घटना ने स्वतंत्रता संग्राम में नए युग का किया आगाज

माई सिटी रिपोर्टर

चरखी दादरी। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता संग्राम की महान घटना चौरा चौरी की 100वीं वर्षगांठ पर सेमिनार आयोजित किया। इसके साथ ही महान स्वतंत्रता सेनानी एमए अयंगार की 131वीं जयंती पर उन्हें नमन किया।

इतिहास विभागाध्यक्ष व मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि चौरा चौरी की घटना ने आजादी के संग्राम में नये युग का आगाज किया। भारत के युवा अब अंग्रेजों से डरकर नही बल्कि डटकर सामना करने लगे। चौरा चौरी वास्तव में दो अलग-अलग गांवों चौरी और चौरा का सम्मिलित क्षेत्र है, जिसे ब्रिटिश भारतीय रेलवे के एक ट्रैफिक मैनेजर ने इन गांवों का नाम एक साथ किया था और जनवरी 1885 में यहां एक रेलवे स्टेशन की स्थापना की थी। जिस थाने को चार फरवरी 1922 को जलाया गया था, वो चौरा गांव में ही था। महात्मा गांधी ने 1920 में ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ असहयोग आंदोलन चलाकर एक साल के अंदर स्वराज मिलने का नारा दिया था। इसमें चौरा चौरी का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। चौरी चौरा कस्बे में 4 फरवरी 1922 को स्वयंसेवकों ने बैठक की और जुलूस निकालने के लिये पास के मुंडेरा बाजार को चुना गया। जब सत्याग्रही थाने के सामने से जुलूस की शक्ल में गुजर रहे थे, तब तत्कालीन थानेदार गुप्तेश्वर सिंह ने जुलूस को अवैध घोषित कर दिया और पुलिसकर्मियों ने जुलूस को रोकने के लिए बल का इस्तेमाल किया। स्वयंसेवकों ने इसका विरोध किया तो पुलिस और स्वयंसेवकों के बीच झड़प हो गई। पुलिस ने भीड़ पर गोली चला दी, जिसमें 11 सत्याग्रही मौके पर ही शहीद हो गए और कई घायल हो गए। इससे सत्याग्रही आक्रोशित हो गए। गोली खत्म होने पर पुलिसकर्मी थाने की तरफ भागे। फायरिंग से भड़की भीड़ ने उन्हें दौड़ा लिया। पुलिस वालों ने थाने के दरवाजे बंद कर लिए और थाने के अंदर छिप गए।

प्रदर्शनकारियों ने सूखी लकड़ियां, कैरोसिन तेल की मदद से थाना भवन को आग लगाई। जिसमें 22 पुलिसकर्मियों की जिंदा जलने से मृत्यु हुई थी। चौरी चौरा कांड के लिए पुलिस ने कई लोगों को अभियुक्त बनाया। गोरखपुर सत्र न्यायालय के न्यायाधीश मिस्टर एचई होल्मस ने 9 जनवरी 1923 को 172 अभियुक्तों को मौत की सजा का फैसला सुनाया। बाद में इलाहाबाद हाईकोर्ट में अभियुक्तों की तरफ से अपील के बाद इसकी पैरवी पंडित मदन मोहन मालवीय ने की और 151 लोगों को फांसी की सजा से बचाने में सफल रहे।

आजादी के बाद प्रथम लोकसभा के उपाध्यक्ष बने अयंगार

डॉ. अमरदीप ने एमए अयंगार के भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में प्रकाश डालते हुए कहा कि 4 फरवरी 1881 को आंध्रप्रदेश में जन्मे अयंगार ने असहयोग आंदोलन के दौरान वकालत छोड़कर आजादी के आंदोलन में भाग लिया। उन्होंने समाज में फैली कुरीतियों, छुआछूत, जाति प्रथा आदि पर प्रहार किये। भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया और आजादी के बाद प्रथम लोकसभा के उपाध्यक्ष बने और दूसरी लोकसभा के अध्यक्ष चुने गये। इस सेमिनार में सवीन, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल सिंह आदि उपस्थित रहे।

अमर उजाला, चरखी दादरी 5.2.22

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 5.2.22

शिक्षकों ने स्वतंत्रता सेनानी एमए आयंगार को किया याद

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता संग्राम की महान घटना चौरा चौरी की 100वीं वर्षगांठ व महान स्वतंत्रता सेनानी एमए आयंगार की 131वीं जयंती के अवसर पर सेमीनार का आयोजन किया गया। सेमीनार संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि चौरा चौरी की घटना ने आजादी के संग्राम में नए युग का आगाज किया। भारत के युवा अब अंग्रेजों से डरकर नहीं बल्कि डटकर सामना करने लगे थे। चौरा चौरी वास्तव में दो अलग-अलग गांवों चौरी और चौरा का सम्मिलित क्षेत्र है। जिसे ब्रिटिश भारतीय रेलवे के एक ट्रैफिक मैनेजर ने इन गांवों का नाम एक साथ किया था और जनवरी 1885 में यहां एक रेलवे स्टेशन की स्थापना की थी। जिस थाने को 4 फरवरी 1922 को जलाया गया था वो चौरा गांव में ही था। महात्मा गांधी ने 1920 में ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ असहयोग आंदोलन चलाकर एक साल के अंदर स्वराज मिलने का नारा दिया था। पूरे भारत से लोगों ने भारी संख्या में भाग लिया। चौरी चौरा कस्बे में 4 फरवरी 1922 को स्वयंसेवकों ने बैठक की और जुलूस निकालने के लिए पास के मुंडेरा बाजार को चुना गया। जब सत्याग्रही थाने के सामने से जुलूस की शक्ल में गुजर रहे थे पुलिस और स्वयंसेवकों के बीच झड़प हो गई। डा. अमरदीप ने एमए आयंगार के जीवन पर भी प्रकाश डाला। इस मौके पर सवीन, डा. अजय कुमार, डा. राजपाल सिंह भी उपस्थित रहे।

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 05-02-2022

चौरी चौरा की घटना ने आजादी के संग्राम में नए युग का आगाज किया

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में स्वतंत्रता संग्राम की महान घटना चौरी चौरा की 100वीं वर्षगांठ एवं महान स्वतंत्रता सेनानी एमए आयंगार के 131वीं जयंती पर सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि चौरी चौरा की घटना ने आजादी के संग्राम में नये युग का आगाज किया। भारत के युवा अब अंग्रेजों से डरकर नही बल्कि डटकर सामना करने लगे।

चौरी चौरा वास्तव में दो अलग-अलग गांवों-चौरी और चौरा का सम्मलित क्षेत्र है जिसे ब्रिटिश भारतीय रेलवे के एक ट्रैफिक मैनेजर ने इन गांवों का नाम एक साथ किया था और जनवरी 1885 में यहां एक रेलवे स्टेशन की स्थापना की थी। जिस थाने को 4 फरवरी 1922 को जलाया गया था, वो चौरा गांव में ही था।

63. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special Seminar on 132nd Birth Anniversary of great freedom fighter and famous as a Frontier Gandhi Abdul Ghaffar Khan and 80 Martyrdom of great revolutionary Sachindra Nath Sanyal on 07.02.2022 and delivered 2 special addresses on "Frontier Gandhi: A Forgotten Hero of Indian Freedom Struggle" and "Sachindra Nath Sanyal: Lifeline of Revolutionary Movement in Colonial India".

दैनिक जागरण चरखी दादरी 14

8.2.22

सचिंद्रनाथ सान्याल व खान अब्दुल गफ्फार को किया याद

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान क्रांतिकारी सचिंद्रनाथ सान्याल की 80वें शहीदी दिवस एवं महान स्वतंत्रता सेनानी खान अब्दुल गफ्फार की 132वीं जयंती के अवसर पर सेमीनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि सचिंद्रनाथ सान्याल भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन के अहम सूत्रधार थे।

उन्होंने भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, बिस्मिल, अशफाक, मा. सूर्य सेन जैसे कई क्रांति वीरों को एकजुट कर अंग्रेजों के खिलाफ जंग छेड़ी थी। ब्रिटिश शासन को समाप्त करने के लिए ब्रिटिश खंजाने को लूटना ही उन्होंने लक्ष्य बनाया और काकोरी कांड को अंजाम देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। काकोरी कांड में इस्तेमाल किए गए माउजर जैसे अत्याधुनिक हथियार जर्मनी से मंगवाए। भारत में आंदोलन के अपराध में इन्हें पहली बार 1916 में काले पानी की सजा और दूसरी बार काकोरी कांड में संलिप्त होने पर 1925 में सजा मिली थी।

बिरोहड़ सरकारी कालेज में विद्यार्थियों को महान क्रांतिकारी शचिंद्रनाथ, अब्दुल गफ्फार खान के बारे में बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 08-02-2022

शचिंद्रनाथ सान्याल के शहीदी दिवस पर सेमिनार

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान क्रांतिकारी शचिंद्रनाथ सान्याल के शहीदी दिवस एवं स्वंतंत्रता सेनानी खान अब्दुल गफ्फार खान की जयंती पर सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा शचिंद्रनाथ सान्याल भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन के अहम सूत्रधार थे। जिन्होंने भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, बिस्मिल, अशफाक, मास्टर सूर्य सेन जैसे कई क्रांति वीरों को एकजुट कर अंग्रेजों के खिलाफ जंग छेड़ दी थी। सेमिनार को सफल बनाने में डॉ. नरेंद्र सिंह, सवीन, पवन कुमार, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल सिंह, संदीप कुमार इत्यादि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

दैनिक जागरण झज्जर

8.2.22

स्वतंत्रता सेनानियों को किया नमन

संसू, साल्हावास : राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वाधान में महान क्रांतिकारी शचिंद्रनाथ सान्याल की 80 वीं शहीदी दिवस एवं महान स्वतंत्रता सेनानी खान अब्दुल गफ्फार खान के 132 वीं जयंती के अवसर पर सेमिनार का आयोजन किया गया।

संयोजक और मुख्य वक्ता डा. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि शचिंद्रनाथ सान्याल भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन के अहम सूत्रधार थे जिन्होंने भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, बिस्मिल, अशफाक, मास्टर सूर्य सेन जैसे कई क्रांति वीरों को एकजुट कर अंग्रेजों के खिलाफ जंग छेड़ दी थी। गदर आन्दोलन को भारत में फ़ैलाने के अपराध में इन्हें पहली बार 1916 काले पानी की सजा और दूसरी बार काकोरी कांड में संलिप्त होने पर 1925 में मिली थी। 1924 में हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन और हिंदुस्तान रिपब्लिकन आर्मी का गठन करके क्रांतिकारी आन्दोलन को नया जीवन प्रदान किया। सन 1942 में यह महान क्रांतिकारी शहीद हो गए। दूसरे भाग में कार्यवाहक प्राचार्य राजेश कुमार ने खान अब्दुल गफ्फार खान के जीवन पर प्रकाश डाला। सेमिनार को सफल बनाने में डा. नरेंद्र सिंह, सवीन, पवन कुमार, डा. अजय कुमार, डा. राजपाल सिंह, संदीप कमार ने महत्वपर्ण भमिका निभाई।

दैनिक भास्कर

झज्जर भास्कर 08-02-2022

झज्जर-बहादुरगढ़

क्रांतिकारी सान्याल के 80वीं शहीदी दिवस पर छात्रों को किया जागरूक

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में कार्यक्रम

महान क्रांतिकारी सान्याल की 80 वीं शहीदी दिवस विचार व्यक्त करते हुए।

भास्कर न्यूज | साल्हावास

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान क्रांतिकारी शचिंद्रनाथ सान्याल की 80 वीं शहीदी दिवस एवं महान स्वतंत्रता सेनानी खान अब्दुल गफ्फार खान के 132 वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष सेमीनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि शचिंद्रनाथ सान्याल भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन के अहम सूत्रधार थे जिन्होंने भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, बिस्मिल, अशफाक, मास्टर सूर्य सेन जैसे कई क्रांति वीरों को एकजुट कर अंग्रेजों के खिलाफ जंग छेड़ दी थी। ब्रिटिश शासन को समाप्त करने के लिए ब्रिटिश खजाने को लूटना ही उन्होंने लक्ष्य बनाया और काकोरी कांड को अंजाम देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। काकोरी कांड में इस्तेमाल किए गए माउजर जैसे अत्याधुनिक हथियार जर्मनी से विशेष रुप से मंगवाए। इसके लिए विशेष तैराकी प्रतियोगिता आयोजित की और प्रथम स्थान प्राप्त करने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के छात्र केशव चक्रवर्ती को जर्मनी भेजकर 50 माउजर सफलतापूर्वक भारत मंगवाए थे। गदर आन्दोलन को भारत में फैलाने के अपराध में इन्हें पहली बार 1916 काले पानी की सजा और दूसरी बार काकोरी कांड में संलिप्त होने पर 1925 में मिली थी। इसी दौरान 1924 में देशभर के युवाओं को वाराणसी बुला कर हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन और हिंदुस्तान रिपब्लिकन आर्मी का गठन करके क्रांतिकारी आन्दोलन को नया जीवन प्रदान किया। कार्यक्रम के दूसरे भाग में कार्यवाहक प्राचार्य राजेश कुमार ने कहा कि 20 साल की उम्र में उन्होंने अपने गृहनगर उत्मान जई में एक स्कूल खोला और 1915 से 1918 तक 3 साल उन्होंने पख्तूनों को जागरूक करने के लिए सैकंडों गांवों की यात्रा की। इसके बाद लोग उन्हें 'बादशाह खान' नाम से पुकारने लगे थे। अंग्रेजों ने इन निहत्थे प्रदर्शनकारियों पर गोलियां चलाने का आदेश दिया, जिसमें 200 से ज्यादा लोग मारे गए। इस विशेष सेमिनार को सफल बनाने में डॉ. नरेंद्र सिंह, सवीन, पवन कुमार, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल सिंह, संदीप कुमार इत्यादि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सेमिनार

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में किया गया आयोजन

काकोरी कांड में इस्तेमाल माउजर जर्मनी से आए थे : डॉ. अमरदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

विद्यार्थियों को संबोधित करते वक्ता। संवाद

साल्हावास। आजादी के अमृत महोत्सव शृंखला के तहत सोमवार को राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में सेमिनार का आयोजन किया गया। महान क्रांतिकारी शचिंद्रनाथ सान्याल की 80 वीं शहीदी दिवस एवं स्वतंत्रता सेनानी खान अब्दुल गफ्फार खान की 132 वीं जयंती के अवसर पर सेमिनार का आयोजन किया गया।

सेमिनार के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि शचिंद्रनाथ सान्याल आंदोलन के सूत्रधार थे, जिन्होंने भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, बिस्मिल, अशफाक, मास्टर सूर्य सेन जैसे कई क्रांतिवीरों को एकजुट कर अंग्रेजों के खिलाफ जंग छेड़ दी थी। ब्रिटिश शासन को समाप्त करने के लिए ब्रिटिश खजाने को लूटना ही उन्होंने लक्ष्य बनाया और काकोरी कांड को अंजाम देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। काकोरी कांड में इस्तेमाल किये गये हथियार जर्मनी से विशेष रूप से मंगवाए। इसके लिए विशेष तैराकी प्रतियोगिता आयोजित की और प्रथम स्थान प्राप्त करने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के छात्र केशव चक्रवर्ती को जर्मनी भेजकर 50 माउजर मंगवाए थे। गदर आंदोलन को भारत में फ़ैलाने के अपराध में इन्हें पहली बार 1916 काले पानी की और दूसरी बार काकोरी कांड में संलिप्त होने पर 1925 में सजा मिली थी। इसी दौरान 1924 में देशभर के युवाओं को वाराणसी बुलाकर हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन और हिंदुस्तान रिपब्लिकन आर्मी का गठन करके आंदोलन को नया जीवन प्रदान किया। वर्ष 1938 में कांग्रेस मंत्रिमंडल ने जब राजनीतिक कैदियों को रिहा किया तो शचींद्रिनाथ भी रिहा हो गये, लेकिन उन्हें घर पर नजरबंद कर दिया गया। कठिन परिश्रम, कारावास और देश की चिंताओं से क्षय रोग से ग्रस्त हो गये। वर्ष1942 में यह महान क्रांतिकारी शहीद हो गया। कार्यवाहक प्राचार्य राजेश कुमार ने सीमांत गांधी के नाम से विख्यात खान अब्दुल गफ्फार खान के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि 20 साल की उम्र में उन्होंने गृहनगर उत्मान जई में एक स्कूल खोला और 1915 से 1918 तक 3 साल उन्होंने पस्तूनों को जागरूक करने के लिए सैकड़ों गांवों की यात्रा की।

अमर उजाला, झज्जर 8.2.22

64. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 91st Death Anniversary of great freedom fighter Moti Lal Nehru l on 08.02.2022 and delivered keynote address on "Motilal Nehru and early phase of Indian Freedom Struggle".

अमर उजाला, चरखी दादरी, 9.2.22

व्याख्यान

बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में मोतीलाल नेहरू की पुण्यतिथि पर हुआ कार्यक्रम, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को किया सम्मानित

मोतीलाल नेहरू ने दुनिया के सामने रखा ब्रिटिश सरकार का काला चिट्ठा

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी मोतीलाल नेहरू की 91वीं पुण्यतिथि पर कार्यक्रम किया गया। इस अवसर पर डॉ. अमरदीप ने चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों को महाविद्यालय के प्रति उनकी अटूट निष्ठा के लिए सम्मानित किया।

कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि मोतीलाल नेहरू ने 'सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेंबली' में विपक्ष का नेता बनकर ब्रिटिश शासन का काला चिट्ठा दुनिया के सामने रखा। दिल्ली में जन्मे मोतीलाल नेहरू प्रतिभाशाली वकील थें। 1918 में महात्मा गांधी के प्रभाव से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से जुड़े और गांधी जी से प्रभावित होकर भारतीय जीवन शैली अपनाकर अपने जीवन को बदलने की पहल की।

उनके द्वारा बनवाया गया 'स्वराज भवन' भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का खास हिस्सा बना। मोतीलाल नेहरू 1919 और 1920 में दो बार कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए। असहयोग आंदोलन की विफलता के बाद उन्होंने देशबंधु चितरंजन दास के साथ 1923 में 'स्वराज पार्टी' का गठन किया और 'सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेंबली' पहुंचकर अपने कानूनी ज्ञान के कारण सरकार के कई कानूनों की जमकर आलोचना की। अमरदीप सिंह ने बताया कि मोतीलाल नेहरू ने आजादी के आंदोलन में भारतीय लोगों के पक्ष को सामने रखने के लिए 'इंडिपेंडेंट' अखबार भी चलाया। कार्यक्रम के अध्यक्ष कार्यवाहक प्राचार्य राजेश कुमार ने बताया कि साइमन कमीशन के विरोध में सर्वदलीय सम्मेलन ने 1927 में मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक समिति बनाई गई जिसे भारत का संविधान बनाने का मसौदा बनाने का दायित्व सौंपा गया। इस समिति की रिपोर्ट को 'नेहरू रिपोर्ट' के नाम से जाना जाता है।

देश की आजादी में विशेष सहयोग देने वाले मोतीलाल नेहरू का निधन 6 फरवरी, 1931 को लखनऊ में हुआ था।

महाविद्यालय में सम्मानित किए गए चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी शिक्षकों के साथ। संवाद

सम्मान

आजादी के अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में हुआ कार्यक्रम

मोतीलाल नेहरू की पुण्यतिथि पर कर्मचारियों का किया सम्मान

संवाद न्यूज एजेंसी

झज्जर। आजादी के अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में मोतीलाल नेहरू की पुण्यतिथि पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों को महाविद्यालय के प्रति उनकी अटूट निष्ठा के लिए विशेष उपहार देकर सम्मानित किया।

कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि मोतीलाल नेहरू ने सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेम्बली में विपक्ष का नेता बनकर ब्रिटिश शासन का काला चिट्ठा दुनिया के सामने रखा। दिल्ली में जन्मे मोतीलाल नेहरू प्रतिभाशाली वकील थे। 1918 में महात्मा गांधी के प्रभाव से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से जुड़े और गांधी जी से प्रभावित होकर देशी भारतीय जीवन शैली अपनाकर देश हित के लिए जुड़े। इनके द्वारा निर्मित स्वराज भवन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का खास हिस्सा बना। उन्होंने 1920 के असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन जैसे बड़े आंदोलनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मोतीलाल नेहरू 1919 और 1920 में दो बार कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए।

बिरोहड़ कॉलेज में चतुर्थश्रेणी कर्मचारी को सम्मानित करते डॉ अमरदीप। संवाद

असहयोग आंदोलन की विफलता के बाद उन्होंने देशबंधु चितरंजन दास के साथ 1923 में स्वराज पार्टी का गठन किया और सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेम्बली पहुंचकर अपने कानूनी ज्ञान के कारण सरकार के कई कानूनों की जमकर आलोचना की। मोतीलाल नेहरू ने आजादी के आंदोलन में भारतीय लोगों के पक्ष को सामने रखने के लिए इंडिपेंडेंट अखबार भी चलाया। कार्यक्रम के अध्यक्ष कार्यवाहक प्राचार्य राजेश कुमार ने बताया कि साइमन कमीशन के विरोध में सर्वदलीय सम्मेलन ने 1927 में मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक समिति बनाई जिसे भारत का संविधान बनाने का मसौदा बनाने का दायित्व सौंपा गया।

इस समिति की रिपोर्ट को नेहरू रिपोर्ट के नाम से जाना जाता है। देश की आजादी में विशेष सहयोग देने वाले मोतीलाल नेहरू का निधन 6 फरवरी, 1931 को लखनऊ में हुआ था।

अमर उजाला, झज्जर, 9.2.22

View All Pages | Page 4 of 4

दैनिक भास्कर

झज्जर भास्कर 09-02-2022

कॉलेज में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों का हुआ सम्मान

साल्हावास | आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी मोतीलाल नेहरु की 91वीं पुण्यतिथि के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. अमरदीप ने चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों को महाविद्यालय के प्रति उनकी अटूट निष्ठा के लिए विशेष उपहार देकर सम्मानित किया।

65. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 14th Death Anniversary of great freedom fighter and social activist Baba Amte on 09.02.2022 and delivered keynote address on “Life and Struggle of Baba Amte and the Indian Freedom Struggle”.

करण भी तकरीबन पूरा हो चुका है। प्रवेश, राजीव व आनंद सांगवान आदि

भ्रवाल, डीईओ शिक्षक मौजूद रहे। संवाद

अमर उजाला, चरखी दादरी 10.2.22

स्वतंत्रता संग्राम में बाबा आमटे ने निभाई पूरी सहभागिता : डॉ. अमरदीप सिंह

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी एवं सामाजिक कार्यकर्त्ता बाबा आमटे की 14वीं पुण्यतिथि पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक और मुख्यवक्ता डॉ. अमरदीप सिंह बाबा आमटे के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि बाबा आमटे ने भारत छोड़ो आंदोलन में जेल में बंद नेताओं के केस लड़ने के लिए वकीलों को संगठित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया था। महात्मा गांधी व विनोबा भावे से प्रभावित बाबा आमटे ने पूरे भारत का भ्रमण किया और गांवों की वास्तविक समस्याओं को जानने की कोशिश की। 35 साल की उम्र में ही उन्होंने अपनी वकालत छोड़ समाजसेवा शुरू की थी। 1985 में राष्ट्रीय एकता की भावना जागृत करने और राष्ट्रीय अखंडता के लिए भारत जोड़ो आंदोलन चलाया, जिसके तहत 116 युवाओं के साथ कन्याकुमारी से कश्मीर तक 5042 किलोमीटर की यात्रा की। पद्मश्री, पद्मभूषण, पद्मविभूषण और रेमन मैग्सेसे जैसे सम्मानों से विभूषित बाबा आमटे का 9 फरवरी 2008 को देहांत हो गया था। कार्यक्रम में डॉ. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार, जितेंद्र आदि प्रोफेसर उपस्थित रहे।

कि उन्हें आज तक कोई औजार नहीं मांगों पर कार्रवाई की जाएगी।

अमर उजाला, झज्जर 10.2.22

पुण्यतिथि पर याद किए गए स्वतंत्रता सेनानी व समाजसेवी बाबा आमटे

संवाद न्यूज एजेंसी

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में हुआ कार्यक्रम

साल्हावास। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत बुधवार को राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी एवं सामाजिक कार्यकर्ता बाबा आमटे की 14 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डा. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि बाबा आमटे ने भारत छोड़ो आंदोलन में जेल में बंद नेताओं के केस लड़ने के लिए वकीलों को संगठित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया था।

महात्मा गांधी और विनोबा भावे से प्रभावित बाबा आमटे ने पूरे भारत का भ्रमण किया। बाबा आमटे ने भारत छोड़ो आंदोलन सहित देश के स्वतंत्रता संग्राम में खुलकर भाग लिया। आजादी के पश्चात एक कुष्ठरोगी को देखने के बाद इनका जीवन बिल्कुल बदल गया और समाज सेवा की भावना बलवती होने लगी। 35 साल की उम्र में ही उन्होंने अपनी वकालत को छोड़कर समाजसेवा शुरू कर दी थी। उन्होंने कुष्ठ रोगियों की सेवा के लिए आनंदवन नामक संस्था की स्थापना की। इसके साथ साथ दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए अन्ध विद्यालय की स्थापना और गरीब, बेसहारा बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने हेतु उन्होंने गोकुल नामक संस्थान का गठन व संचालन किया। 1985 में विशेषकर युवाओं को लक्षित करते हुए राष्ट्रीय एकता की भावना जागृत करने आंदोलन चलाया।

66. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 272nd Birth Anniversary of great freedom fighter and revolutionary Tilka Manjhi on 11.02.2022 and delivered keynote address on "Tilka Manjhi and First Revolt against British Rule".

आयोजन

महान क्रांतिकारी तिलका मांझी की 272 वीं जयंती पर बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में आयोजित हुआ कार्यक्रम

'तिलका मांझी ने जहरीले तीर से मारा था अंग्रेजी कलेक्टर अगस्टस'

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान क्रांतिकारी तिलका मांझी की 272वीं जयंती पर कार्यक्रम किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि तिलका मांझी ने भारतीय आजादी के संग्राम का बीज बोया था और वो पहले शहीद थे। अंग्रेजी राज की बर्बरता के खिलाफ लोहा लेने वाले जबरा पहाड़िया के नाम से मशहूर तिलका मांझी एक ऐसा योद्धा थे, जिन्होंने अंग्रेजों के भारत आगमन को अभिशाप मानकर उनके खिलाफ खुला विद्रोह किया था। भारत के पहले विद्रोह के नेता तिलका मांझी का जन्म 11 फरवरी 1750 को हुआ था और उन्होंने राजमहल, झारखंड की पहाड़ियों पर अंग्रेजी हुकूमत से 15 वर्षों तक लोहा लिया। 1770 में जब भीषण अकाल पड़ा तो तिलका ने अंग्रेजी शासन का खजाना लूटकर आम गरीब लोगों में बांट दिया। इसी के साथ उनका संघर्ष हुल आदिवासियों का विद्रोह प्रारंभ हुआ। उन्होंने अंग्रेजी और उनके चापलूस सामंतों पर लगातार हमले किए।

बिरोहड़ राजकीय कॉलेज में स्वतंत्रता सेनानी की जानकारी देते डॉ.अमरदीप सिंह। संवाद

1784 में उन्होंने भागलपुर पर हमला किया और 13 जनवरी 1784 में ताड़ के पेड़ पर चढ़कर घोड़े पर सवार अंग्रेजी कलेक्टर अगस्टस क्लीवलैंड को अपने जहरीले तीर का निशाना बनाकर मार गिराया। कलेक्टर की मौत से पूरी ब्रिटिश साम्राज्य हिल गया और ब्रिटिश अफसर जनरल आयरकुट को तिलका मांझी को पकड़ने का कार्य दिया गया। एक गद्दार ने उनके बारे में सूचना अंग्रेजों तक पहुंचाई और सूचना मिलते ही रात के अंधेरे में अंग्रेज सेनापति आयरकूट ने तिलका के ठिकाने पर हमला कर दिया लेकिन किसी तरह वे बच निकले और उन्होंने पहाड़ियों में शरण लेकर अंग्रेजों के खिलाफ छापा जारी रखी।

कार्यक्रम के संरक्षक एवं महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. अनिता रानी ने कहा कि अंग्रेजों ने पहाड़ों की घेराबंदी करके तिलका मांझी तक पहुंचने वाली तमाम सहायता रोक दी। इसकी वजह से तिलका मांझी को अन्न और पानी के अभाव में पहाड़ों से निकल कर लडना पड़ा और एक दिन वह पकड़े गए। तिलका मांझी को चार घोड़ों से घसीट कर भागलपुर ले जाया गया। हालांकि 13 जनवरी 1785 को उन्हें एक बरगद के पेड़ से लटकाकर फांसी दे दी गई थी परंतु तिलका अपने पीछे अपनी मिट्टी के लिए मर मिटने की एक बलिदानी परंपरा की शुरुआत कर गये, जिस पर असंख्य क्रांतिकारी आगे बढ़ते रहे। कार्यक्रम में जितेंद्र, पवन कुमार, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल सिंह आदि उपस्थित रहे।

अमर उजाला, चरखी दादरी 12.2.22

'स्वतंत्रता सेनानी तिलका मांझी ने बोया स्वतंत्रता संग्राम का बीज'

अमर उजाला, झज्जर 12.2.22

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान क्रांतिकारी तिलका मांझी की 272वीं जयंती के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि तिलका मांझी ने स्वतंत्रता संग्राम का बीज बोया था और वो पहले शहीद थे।

अंग्रेजी राज की बर्बरता के खिलाफ लोहा लेने वाले जबरा पहाड़िया के नाम से मशहूर तिलका मांझी एक ऐसा योद्धा थे जिन्होंने अंग्रेजों के भारत आगमन को अभिशाप मानकर उनके खिलाफ खुला विद्रोह किया था। भारत का पहले विद्रोह के नेता तिलका मांझी का जन्म 11 फरवरी 1750 को हुआ था और उन्होंने राजमहल, झारखंड की पहाड़ियों पर अंग्रेजी हुकूमत से 15 वर्षों तक लोहा लिया। महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. अनीता रानी ने कहा कि अंग्रेजों ने पहाड़ों की घेराबंदी करके तिलका मांझी तक पहुंचने वाली तमाम सहायता रोक दी। इसकी वजह से तिलका मांझी को अन्न और पानी के अभाव में पहाड़ों से निकल कर लड़ना पड़ा और एक दिन वह पकड़े गए। कार्यक्रम में जितेंद्र, पवन कुमार, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल सिंह आदि उपस्थित रहे।

67. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 143rd Birth Anniversary of great freedom fighter Sarojini Naidu on 12.02.2022 and delivered keynote address on "Women in Freedom Struggle Movement and Role of Sarojini Naidu".

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 13-02-2022

महिलाओं की भागीदारी ने आजादी के संग्राम को दी नई दिशाः डॉ. अमरदीप

राजकीय कॉलेज में स्वतंत्रता सेनानी सरोजिनी नायडू की 143वीं जयंती पर हुआ कार्यक्रम

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी सरोजिनी नायडू की 143वीं जयंती पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि सरोजिनी नायडू अपने स्वभाव से मृदुल पर अपने बुलंद हौंसलों एवं महिलाओं की भागीदारी द्वारा से आजादी के संग्राम को नई दिशा दी। 13 फरवरी 1879 को हैदराबाद में जन्मी सरोजिनी नायडू बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि की थी। जिन्होंने 13 साल की आयु में 1300 लाइनों की पहली लंबी कविता लिखी थी। 1914 में महात्मा गांधी से लंदन में मिलने के उनके जीवन में क्रांतिकारी बदलाव हुआ और वह भी स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ीं। 1925 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली भारतीय महिला अध्यक्ष चुनी गई। दांडी मार्च के दौरान गांधी जी के साथ अग्रिम पंक्ति में चलने वालों में सरोजनी नायडू भी शामिल थीं।1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान सरोजिनी नायडू ने नेतृत्व में धारासाल सत्याग्रह हुआ जिसके प्रत्यक्षदर्शी अमेरिकी पत्रकार वेब मिल्लर ने सत्याग्रहियों पर अंग्रेजों के अत्याचार का वर्णन बड़े मार्मिक शब्दों के साथ किया था और बताया था कि कुछ ही मिनटों में सारा क्षेत्र खून से लाल हो गया और किसी भी सत्याग्रही ने प्रतिकार में हाथ भी नही उठाया था।

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते वक्ता।

पवन कुमार ने बताया कि 1942 भारत छोड़ो आंदोलन में उनको 21 महीनों तक जेल में रहना पड़ा। कार्यक्रम के संरक्षक प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि सरोजिनी नायडू ने जीवन-पर्यंत गांधीजी के विचारों और सत्य और अहिंसा के मार्ग का अनुसरण किया। आजादी के पश्चात उन्हें उत्तर प्रदेश की पहली महिला राज्यपाल नियुक्त होने का गौरव प्राप्त हुआ। इस विशेष कार्यक्रम में जितेन्द्र, पवन कुमार, डा. नरेंद्र सिंह, प्रदीप कुमार इत्यादि उपस्थित रहे।

अमर उजाला, चरखी दादरी 13.2.22

नमन

बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में भारत कोकिला की जयंती पर किया गया कार्यक्रम

'सरोजिनी नायडू ने स्वतंत्रता आंदोलन को दी नई दिशा'

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी और भारत कोकिला सरोजिनी नायडू की 143वीं जयंती पर कार्यक्रम किया गया। कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप सिंह रहे। उन्होंने सरोजिनी नायडू के बारे में विस्तार से बताया।

उन्होंने कहा कि रोजिनी नायडू ने अपने मृदुल स्वभाव और बुलंद हौसलों से महिलाओं की भागीदारी बढ़ाकर आजादी के संग्राम को नई दिशा दी। 13 फरवरी 1879 को हैदराबाद में जन्मी सरोजिनी नायडू बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि की थीं, जिन्होंने 13 साल की आयु में 1300 लाइनों की पहली लंबी कविता लिखी थी।1914 में महात्मा गांधी से लंदन में मिलने से उनके जीवन में क्रांतिकारी बदलाव हुआ और वह भी स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ीं। 1925 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली भारतीय महिला अध्यक्ष चुनी गईं। दांडी मार्च के दौरान गांधी जी के साथ अग्रिम पंक्ति में चलने वालों में सरोजनी नायडू भी शामिल थीं। 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान सरोजिनी नायडू ने नेतृत्व में धारासाल सत्याग्रह हुआ जिसके प्रत्यक्षदर्शी अमेरिकी पत्रकार वेब मिल्लर ने सत्याग्रहियों पर अंग्रेजों के अत्याचार का वर्णन बड़े मार्मिक शब्दों के साथ किया था और बताया था कि कुछ ही मिनटों में सारा क्षेत्र खून से लाल हो गया और किसी भी सत्याग्रही ने प्रतिकार में हाथ भी नहीं उठाया था।

बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में अपने विचार रखते डॉक्टर अमरदीप। संवाद

पवन कुमार सासरौली ने बताया कि 1942 भारत छोड़ो आंदोलन में उनको 21 महीनों तक जेल में रहना पड़ा। कार्यक्रम के संरक्षक और महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि सरोजिनी नायडू ने जीवन-पर्यंत गांधीजी के विचारों और सत्य और अहिंसा के मार्ग का अनुसरण किया। आजादी के पश्चात उन्हें उत्तर प्रदेश की पहली महिला राज्यपाल नियुक्त होने का गौरव प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में जितेंद्र, पवन कुमार, डॉ. नरेंद्र सिंह, प्रदीप कुमार आदि उपस्थित रहे।

दैनिक जागरण, झज्जर 13.2.22

सरोजनी नायडू की जयंती पर व्याख्यान का आयोजन

साल्हावास : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी और भारत कोकिला सरोजिनी नायडू की 143 वीं जयंती के अवसर पर व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया। डा. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि सरोजिनी नायडू अपने स्वभाव से मृदुल पर अपने बुलंद होंसलों एवं महिलाओं की भागीदारी द्वारा आजादी के संग्राम को नई दिशा दी। 13 फरवरी 1879 को हैदराबाद में जन्मी सरोजिनी नायडू बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि की थी, जिन्होंने 13 साल की आयु में 1300 लाइनों की पहली लंबी कविता लिखी। 1914 में महात्मा गांधी से लंदन में मिलने के उनके जीवन में क्रांतिकारी बदलाव हुआ। (संसू)

Charkhi Dadr

dainik Jagran, Charkhi Dadri

13.2.2022

छात्र और शिक्षकों ने स्वतंत्रता सेनानी, भारत कोकिला को किया याद

जागरण संवाददाता, बरसी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी और भारत कोकिला सरोजिनी नायडू की 143वीं जयंती के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि सरोजिनी नायडू ने आजादी के संग्राम में विशेष भूमिका निभाई। 13 फरवरी 1879 को हैदराबाद में जन्मी सरोजिनी नायडू बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि की थी। 1914 में महात्मा गांधी से लंदन में मिलने के उनके जीवन में क्रांतिकारी बदलाव हुआ और वह भी स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ीं। 1925 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली भारतीय महिला अध्यक्ष चुनी गई। पवन सासरौली ने बताया कि 1942 भारत छोड़ो आंदोलन में उनको 21 महीनों तक जेल में रहना पड़ा। महाविद्यालय प्राचार्या डा. अनिता रानी ने कहा कि सरोजिनी नायडू ने जीवन पर्यंत महात्मा गांधी के विचारों का अनुसरण किया। इस मौके पर जितेंद्र, पवन कुमार, डा. नरेंद्र सिंह, प्रदीप कुमार आदि भी उपस्थित रहे।

68. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 91st Death Anniversary of great freedom fighter and Social Reformer Santram B.A. on 14.02.2022 and delivered keynote address on "Life and Mission: Santram B.A.".

Amar Ujala, Charkhi Dadri, 15.02.2022

संतराम ने रूढ़िवादिता और अन्धविश्वास के खिलाफ खोला था मोर्चा : डॉ. अमरदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान समाज सुधारक संतराम बीए मांझी की 272 वीं जयंती पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि संतराम वह महान समाज सुधारक थे जिन्होंने भारत में जाति और वर्ग विहीन समाज की स्थापना के लिए आजीवन संघर्ष किया।

समतामूलक समाज के स्थापना के महान उद्देश्य के अधिष्ठाता ऐसे महान सेनानी का जन्म 14 फरवरी 1887 को पंजाब के होशियारपुर में हुआ था। 1909 में गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर से बीए कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद इन्हें जनता द्वारा सम्मान पूर्वक संतराम बीए कहकर पुकारना प्रारंभ कर दिया था।

आर्य समाज के प्रभाव में आने के पश्चात भाई परमानंद के साथ मिलकर 1922 में जाति-पाति तोड़क मंडल की स्थापना की और इस मंडल के माध्यम से उन्होंने देश में फैली जातिय विषमता, रूढ़िवादिता, पाखंडवाद और अंधविश्वास के खिलाफ सशक्त आवाज उठाई। धीरे-धीरे इस संगठन का दायरा पंजाब से बढ़कर पूरे भारत में फैल गया और संतराम के प्रयासों से सैकड़ों अंतरजातीय विवाह, निम्न जातियों का उत्थान, शिक्षा सुधार आदि क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किए।

इस मंडल के तत्वावधान में हिंदू धर्म और समाज के सुधार के लिए 1936 के वार्षिक अधिवेशन के लिए डॉ. भीमराव आंबेडकर को निमंत्रण दिया परंतु मंडल के अन्य सदस्यों के डॉ. आंबेडकर के विचारों पर सहमति न होने की वजह से इस अधिवेशन को निरस्त कर दिया गया और बाद में डॉ. आंबेडकर ने अपने भाषण को पुस्तक के रूप में एनीलेशन ऑफ कास्ट नाम से प्रकाशित करवा दिया था।

कार्यक्रम के संरक्षक एवं महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि आजादी के पश्चात संतराम बीए ने अपनी मुहिम को आगे बढ़ाते हुए हिंदू धर्म और समाज के सुधार के लिए 1948 में अपना समाज नामक पुस्तक लिखी। कार्यक्रम में जितेंद्र, प्रदीप कुमार, डॉ. राजपाल सिंह आदि उपस्थित रहे।

15-02-2022

महान समाज सुधारक थे स्वतंत्रता सेनानी संतराम बीए

चरखी दादरी | बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी संतराम बीए की 272वीं जयंती पर कार्यक्रम किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि संतराम बीए वह महान समाज सुधारक थे जिन्होंने भारत में जाति और वर्ग विहीन समाज की स्थापना के लिए आजीवन संघर्ष किया। समतामूलक समाज के स्थापना के महान उद्देश्य के अधिष्ठाता ऐसे महान सेनानी का जन्म 14 फरवरी 1887 को पंजाब के होशियारपुर के कुम्हार समाज में हुआ था। 1909 गवर्नमेंट कॉलेज, लाहौर से बीए उत्तीर्ण करने के बाद इन्हें जनता द्वारा सम्मानपूर्वक संतराम बीए कहकर पुकारना प्रारंभ कर दिया था। आर्य समाज के प्रभाव में आने के पश्चात भाई परमानंद के साथ मिलकर 1922 में जाति-पाति तोड़क मंडल की स्थापना की और इस मंडल के माध्यम से उन्होंने देश में फैली जातीय विषमता, रूढ़िवादिता, पाखंडवाद और अंधविश्वास के खिलाफ सशक्त आवाज उठाई। कार्यक्रम के संरक्षक प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि आजादी के पश्चात संतराम बीए ने अपनी मुहीम को आगे बढ़ाते हुए हिंदू धर्म और समाज के सुधार के लिए 1948 में अपना समाज पुस्तक लिखी।

69. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 74th Death Anniversary of great freedom fighter and Poet Subhadra Kumari Chauhan on 15.02.2022 and delivered keynote address on "Subhadra Kumari Chauhan: Role of Women & Literature in the Indian Freedom Struggle".

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 16-02-2022

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में सुभद्राकुमारी चौहान को याद किया

भास्कर न्यूज | साल्हावास

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी और लेखिका सुभद्राकुमारी चौहान की 74 वीं पुण्यतिथि पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता इतिहास विभाग के अध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि सुभद्राकुमारी चौहान ने अपनी कविताओं के माध्यम से युवाओं में राष्ट्रीयता की भावना फैलाने में अहम भूमिका निभाई। उनकी राष्ट्रवादी कविता झांसी की रानी में खूब लड़ी मर्दानी वाक्यांश उस प्रत्येक भारतीय महिला स्वतंत्रता सेनानी के लिए प्रयुक्त होने लगा था, जो राष्ट्र की आजादी के संग्राम में भाग लेने लगी थी। 1904 में सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म सयुंक्त प्रान्त के गांव निहालपुर में हुआ था। उनकी पहली कविता सिर्फ नौ साल की उम्र में प्रकाशित हुई थी। 16 वर्ष की आयु में वह ब्रिटिश राज के खिलाफ महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में शामिल हो गईं। इस कार्यक्रम के संरक्षक और महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि इनकी रचनाओं में राष्ट्रीय आंदोलन, स्त्रियों की स्वाधीनता, जातियों का उत्थान समाहित है।

70. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 91st Death Anniversary of great freedom fighter and revolutionary Balwant Vasudev Fadke on 17.02.2022 and delivered keynote address on "Role of Balwant Vasudev Fadke: A Saga of Revolt against British Rule".

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 19.2.22

क्रांतिकारी वासुदेव बलवंत की शहादत को किया याद

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में महान स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रांतिकारी वासुदेव बलवंत फड़के की 139वीं पुण्य तिथि पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि 1857 की क्रांति की विफलता के बाद एक बार फिर भारतीयों में संघर्ष की चिंगारी वासुदेव बलवंत फड़के ने ही जलाई थी। इस महान क्रांतिकारी सेनानी का जन्म 4 नवंबर 1845 में महाराष्ट्र के रायगड जिले के शिरढोणे गांव

चार नवंबर 1845 में महाराष्ट्र के रायगड जिले के शिरढोणे गांव में हुआ था क्रांतिकारी वासुदेव का जन्म

में हुआ था। बचपन में शिक्षा के प्रति विशेष लगाव रखने वासुदेव मुम्बई विश्वविद्यालय के आरंभिक स्नातकों में से एक थे। ब्रिटिश सरकार में अनेक नौकरियां करते हुए इनकी पदोन्नति के रूप में पूणे के मिल्ट्री एकाउंट्स डिपार्टमेंट में नियुक्ति हुई। इस दौरान वासुदेव निरंतर अन्य स्वतंत्रता सेनानियों के संपर्क में रहे। 1871 में उनकी मां की तबीयत खराब होने पर उनको ब्रिटिश सरकार द्वारा छुट्टी नहीं देने पर उन्होंने ब्रिटिश सेवा छोड़ दी। इसके बाद गांव में किसानों की बुरी हालत देखकर और महादेव गोविंद रानाडे के पूना सार्वजनिक सभा के विचारों तथा दादाभाई नौरोजी के धन के निष्कासन सिद्धांत ने वासुदेव को बहुत प्रभावित किया। वासुदेव की सेना और अंग्रेजी सेना में कई बार मुठभेड़ हुई। महाविद्यालय प्राचार्या डा. अनिता रानी ने कहा कि 20 जुलाई 1879 को वासुदेव बीमारी की हालत में एक मंदिर में आराम कर रहे थे और इसकी खबर अंग्रेजों को लग गई। वासुदेव को गिरफ्तार कर लिया गया। उनके खिलाफ राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया और उन्हें फांसी की सजा सुनाई गई। लेकिन महादेव आप्टे को बेहतरीन पैरवी से उनकी मौत की सजा को कालापानी की सजा में बदल दिया गया और उन्हें अंडमान की जेल में भेजा गया। 17 फरवरी 1883 को कालापानी की सजा काटते हुए जेल के अंदर ही देश का यह वीर सपूत शहीद हो गया। इस अवसर पर डा. नरेंद्र सिंह, जितेंद्र, पवन कुमार भी उपस्थित रहे।

71. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 91st Death Anniversary of great freedom fighter and revolutionary reformer Lahuji Ragoji Salve on 18.02.2022 and delivered keynote address on "Lahuji Raghoji Salve: Untold Contribution in the Indian Freedom Struggle".

अमर उजाला, चरखी दादरी 19.2.22

विद्यार्थियों ने स्वतंत्रता सेनानी लहूजी राघोजी साल्वे को किया नमन

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में स्वतंत्रता सेनानी एवं समाज सुधारक लहूजी राघोजी साल्वे की 141वीं पुण्यतिथि पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। डॉ. अमरदीप ने कहा कि लहूजी राघोजी साल्वे क्रांतिकारियों के प्रेरणास्रोत और हथियारों के प्रशिक्षक थे। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में व्यायामशालाओं के माध्यम से क्रांतिकारियों को एकजुट करने की प्रक्रिया उन्होंने शुरू की थी। लहूजी राघोजी ने सबसे पहले पुणे के गंजपेठ में एक व्यायामशाला शुरू की और गुप्त हथियार प्रशिक्षण के लिए गुलटेकडी क्षेत्र में एकांत में एक जगह चुनी। 17 फरवरी 1881 को पुणे के संगमपुरा इलाके में एक झोपड़ी में लहूजी साल्वे की मृत्यु हो गई। संवाद

72. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 91st Death Anniversary of great freedom fighter Gopal Krishna Gokhle and Gokul Dass Bhatt on 19.02.2022 and delivered keynote address on "Life and Struggle of Baba Amte and the Indian Freedom Struggle".

पुण्यतिथि पर याद किए गए गोखले और गोकुलभाई

गांव बिरोहड़ कॉलेज में व्याख्यान में शामिल युवा। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी गोपाल कृष्ण गोखले की 107 वीं पुण्यतिथि एवं गोकुलभाई भट्ट की 124 वीं जयंती के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विशिष्ठ अतिथि के रूप में नेहरू कॉलेज, झज्जर से डॉ. तमसा ने कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गोपाल कृष्ण गोखले ने महात्मा गांधी जैसे नेता को राजनीतिक गुर सिखाए। वहीं गोकुलभाई ने गांधीवादी विचारों को जन जन तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

1866 को वर्तमान महाराष्ट्र में जन्मे गोखले ने सशक्तीकरण, शिक्षा के विस्तार और तीन दशकों तक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की दिशा में कार्य किया। वर्ष 1899 से 1902 के बीच वह बॉम्बे लेजिस्लेटिव काउंसिल के सदस्य रहे। वर्ष 1902 से 1915 तक उन्होंने इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल में काम किया। नरम दल के नेता के रूप में वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बनारस अधिवेशन 1905 के अध्यक्ष बने। वैचारिक मतभेद के बावजूद वर्ष 1907 में उन्होंने लाला लाजपत राय की रिहाई के लिए अभियान चलाया।

प्राध्यापक जितेंद्र ने कहा कि देश की आजादी के दौरान राजस्थान की देशी रियासतों के लोगों में राष्ट्रीय चेतना फैलाने में भूमिका निभाई थी। आजादी के संग्राम में क्रांतिकारी गोकुलभाई भट्ट वर्ष 1920 में असहयोग आंदोलन के दौरान पढ़ाई छोड़कर आंदोलन में कूद पड़े। गोकुलभाई को पहली बार 6 अप्रैल 1921 को बंबई सरकार ने गिरफ्तार किया। इसके बाद भी उन्होंने गांधीजी के हर आंदोलन में भाग लिया। वर्ष 1930 के 'नमक सत्याग्रह' के दौरान वह नमक कानून तोड़ने के सिलसिले में गिरफ्तार हुए। महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि गोकुलभाई भट्ट ने 1939 को सिरोही प्रजामंडल की स्थापना की। राजस्थान में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने वाले गोकुलभाई भट्ट का 6 अक्तूबर, 1986 को निधन हो गया।

अमर उजाला, झज्जर 20.2.22

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 21.2.22

गोपाल कृष्ण गोखले को किया याद

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी गोपाल कृष्ण गोखले की 107वीं पुण्यतिथि एवं गोकुल भाई भट्ट की 124वीं जयंती के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विशिष्ठ अतिथि के रूप में नेहरु कालेज झज्जर से डा. तमसा ने कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि भारतीय स्वंतन्त्रता संग्राम में जहां गोपाल कृष्ण गोखले ने महात्मा गांधी जैसे नेता को राजनीतिक गुर सिखाए वहीं गोकुल भाई ने गांधीवादी विचारों को जन जन तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। गोपाल कृष्ण गोखले एक महान समाज सुधारक और शिक्षाविद् थे। उन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को अनुकरणीय नेतृत्व प्रदान किया। 1866 को वर्तमान महाराष्ट्र में जन्मे गोखले ने सामाजिक सशक्तिकरण, शिक्षा के विस्तार और तीन दशकों तक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की दिशा

गांव बिरोहड़ के राजकीय कालेज में कार्यक्रम को संबोधित करते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति

में कार्य किया। नरम दल के नेता के रूप में वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बनारस अधिवेशन 1905 के अध्यक्ष बने। वैचारिक मतभेद के बावजूद वर्ष 1907 में उन्होंने लाला लाजपत राय की रिहाई के लिए अभियान चलाया। गणित प्राध्यापक डा. नरेंद्र सिंह के कहा कि भारतीय शिक्षा के विस्तार के लिए वर्ष 1905 में उन्होंने सर्वेंट्स आफ इंडिया सोसाइटी की स्थापना की। उन्हें भारतीय राजनीति के दो महान नेताओं महात्मा गांधी और मोहम्मद अली जिन्नाह के राजनीतिक गुरु के रूप में भी जाना जाता है। आज के दिन 19 फरवरी 1915 को मुंबई में उन्होंने अंतिम सांस ली थी। 19 फरवरी 1898 को जन्मे राजस्थान के गांधी के नाम से प्रसिद्ध गोकुलभाई भट्ट के जीवन और संघर्ष बारे इतिहास प्राध्यापक जितेंद्र ने कहा कि भारत की आजादी के दौरान उन्होंने राजस्थान की देशी रियासतों के लोगों में राष्ट्रीय चेतना फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन पर वर्ष 1920 में असहयोग आंदोलन के दौरान पढ़ाई छोड़कर आंदोलन में कूद पड़े।

गोकुल भाई को पहली बार 6 अप्रैल 1921 को मुम्बई सरकार ने गिरफ्तार किया। वर्ष 1930 के नमक सत्याग्रह के दौरान वह नमक कानून तोड़ने के सिलसिले में गिरफ्तार हुए। गोकुलभाई भट्ट का 6 अक्टूबर 1986 को निधन हो गया।

अमर उजाला, चरखी दादरी 20.2.22

कार्यक्रम — बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में स्वतंत्रता सेनानी गोपाल कृष्ण गोखले की पुण्यतिथि व गोकुलभाई भट्ट की जयंती पर हुआ कार्यक्रम

स्वतंत्रता सेनानी गोपाल कृष्ण गोखले और गोकुलभाई भट्ट को किया याद

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में शनिवार को स्वतंत्रता सेनानी गोपाल कृष्ण गोखले की 107वीं पुण्यतिथि एवं गोकुलभाई भट्ट की 124वीं जयंती पर कार्यक्रम किया गया। विशिष्ट अतिथि के तौर पर झज्जर नेहरू कॉलेज से डॉ. तमसा ने कार्यक्रम में भाग लिया।

उन्होंने कहा कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जहां गोपाल कृष्ण गोखले ने महात्मा गांधी जैसे नेता को राजनीतिक गुर सिखाए तो वहीं गोकुलभाई ने गांधीवादी विचारों को जन जन तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। गोपाल कृष्ण गोखले एक महान समाज सुधारक और शिक्षाविद् थे, जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को अनुकरणीय नेतृत्व प्रदान किया। 1866 को वर्तमान महाराष्ट्र में जन्मे गोखले ने सामाजिक सशक्तीकरण, शिक्षा के विस्तार और तीन दशकों तक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की दिशा में कार्य किया। महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि गोकुलभाई भट्ट ने 1939 को सिरोही प्रजामंडल की स्थापना की और जब सिरोही के राजा ने कांग्रेस के झंडे को बैन किया तो उन्होंने झंडे की टोपी बनाने की मुहिम चलाई। इस मौके पर इतिहास विभागाध्यक्ष अमरजीत ने भी विचार रखे।

गांवों में निकाली जाएगी शांति यात्रा : बीके वसुधा

झोझूकलां। सेठ किशनलाल मंदिर में दिव्य संस्कार व संस्कृति के निर्माता शिव विषय पर साप्ताहिक कार्यक्रम आयोजित होगा। यह जानकारी प्रेस को जारी बयान में ब्रह्माकुमारी वसुधा ने दी। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ रविवार को सुबह 11 बजे किया जाएगा। समारोह में बतौर मुख्य वक्ता माउंट आबू से राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी उर्मिला शिरकत करेंगी। कार्यक्रम में स्वामी योगानंद महाराज, एचसीएस मनोज दलाल, खंड एवं पंचायत अधिकारी सुभाष शर्मा आदि विशिष्ट अतिथि होंगे। साप्ताहिक कार्यक्रम के तहत गांवों में शांति यात्रा, कलश यात्रा और प्रवचन कार्यक्रम आयोजित होंगे।

छात्रों और शिक्षकों ने शिवाजी को किया याद

चरखी दादरी। गांव सरूपगढ़-सांतौर स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में महान योद्धा छत्रपति शिवाजी की जयंती मनाई गई। प्राचार्य जोगेंद्र फुलिया व इतिहास प्रवक्ता रॉकी ने छात्रों को बताया कि शिवाजी कुशल व चतुर शासक बने। वे गोरिल्ला युद्ध में पारंगत थे। उनकी सूझबूझ व कुशल रणनीति का मुगल भी लोहा मानते थे। अपने इन्हीं गुणों के दम पर उन्होंने मराठा साम्राज्य की नींव रखी। महाराष्ट्र में शिवाजी की जयंती शिव जयंती के रूप में मनाई जाती है। उनके पास शक्तिशाली घोड़े थे, जिनके नाम मोती, विश्वास, रणवीर आदि थे। इस अवसर पर कृष्ण कौशिक, बिजेंद्र, मुकेश राजोतिया, प्रवीन सैनी, अश्वनी, जयसिंह, प्रवीन, संगीता, स्नेह, सुरेश, नवदीप, माया, रविंद्र प्रवक्ता, रविंद्र, निरूद्दीन, ललिता आदि स्टाफ सदस्य उपस्थित थे।

सरूपगढ़ राजकीय स्कूल में छात्रों को जानकारी देते हुए। संवाद

73. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 91st Death Anniversary of great freedom fighter and revolutionary Rani Chennama on 21.02.2022 and delivered keynote address on "the Great Revolt of Queen Chennamma and Its Importance in Indian Freedom Struggle".

Dainik Jagran, Jhajjar 22.02.2022

पुण्यतिथि पर रानी चेन्नम्मा को किया याद

संवाद न्यूज एजेंसी

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में कार्यक्रम का आयोजन किया गया

झज्जर। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी रानी चेन्नम्मा के 193 वीं शहीदी दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि अंग्रेजी साम्राज्य के खिलाफ विद्रोह का बिगुल बजाने वाली पहली महिला शासिका कित्तूर की रानी चेन्नम्मा थीं।

झलकारी बाई और लक्ष्मीबाई जैसा रण कौशल का परिचय देने वाली रानी चेन्नम्मा का जन्म 23 अक्टूबर, 1778 में हुआ था। उनकी शादी देसाई वंश के राजा मल्लासारजा से हुई। परन्तु शीघ्र ही उनके पति और बाद में 1824 में उनके एकमात्र पुत्र की मृत्यु हो गई।

उन्होंन कहा कि इसके पश्चात् उन्होंने एक अन्य बच्चे शिवलिंगप्पा को गोद ले लिया और अपनी गद्दी का वारिस घोषित किया, लेकिन साम्राज्य विस्तार की लालसा में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने इस कार्य को अस्वीकार्य कर दिया। हालांकि उस समय तक हड़प नीति लागू नहीं हुई थी फिर भी ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने 1824 में कित्तुरु पर कब्जा करने के प्रयास शुरू कर दिए। ब्रिटिश शासन ने शिवलिंगप्पा को निर्वासित करने का आदेश दिया, लेकिन चेन्नम्मा ने अंग्रेजों का आदेश नहीं माना। उन्होंने बॉम्बे प्रेसिडेंसी के लेफ्टिनेंट गवर्नर लॉर्ड एलफिंस्टन को एक पत्र भेजा। उन्होंने कित्तुरु के मामले में हड़प नीति नहीं लागू करने का आग्रह किया, लेकिन उनके आग्रह को अंग्रेजों ने ठुकरा दिया। इस तरह से ब्रिटिश और कित्तुरु के बीच लड़ाई शुरू हो गई। अंग्रेजों ने कित्तुरु के खजाने और आभूषणों के जखीरे को जब्त करने की कोशिश की लेकिन वे सफल नहीं हुए। अंग्रेजों ने 20000 सिहापियों और 400 बंदूकों के साथ कित्तुरु पर हमला कर दिया। अक्टूबर 1824 में उनके बीच पहली लड़ाई हुई। उस लड़ाई में ब्रिटिश सेना को भारी नुकसान उठाना पड़ा। कलेक्टर और अंग्रेजों का एजेंट सेंट जॉन ठाकरे कित्तुरु की सेना के हाथों मारा गया। चेन्नम्मा के सहयोगी अमातूर बेलप्पा ने उसे मार गिराया था और ब्रिटिश सेना को भारी नुकसान पहुंचाया था। दो ब्रिटिश अधिकारियों सर वॉल्टर एलियट और स्टीवेंसन को बंधक बना लिया गया। अंग्रेजों ने वादा किया कि अब युद्ध नहीं करेंगे तो रानी चेन्नम्मा ने ब्रिटिश अधिकारियों को रिहा कर दिया, लेकिन अंग्रेजों ने धोखा दिया और फिर से युद्ध छेड़ दिया। इस बार ब्रिटिश अफसर चैपलिन ने पहले से भी ज्यादा सिपाहियों के साथ हमला किया। सर थॉमस मुनरो का भतीजा और सोलापुर का सब कलेक्टर मुनरो मारा गया।

Amar Ujala, Charkhi Dadri, 22.02.2022

कित्तुर की रानी चेन्नम्मा ने बजाया था अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का बिगुल

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी रानी चेन्नम्मा के 193 वीं शहीदी दिवस के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि अंग्रेजी साम्राज्य के खिलाफ विद्रोह का बिगुल बजाने वाली पहली महिला शासिका कित्तूर की रानी चेन्नम्मा थी। झलकारी बाई और लक्ष्मीबाई जैसा रण कौशल का परिचय देने वाली रानी चेन्नम्मा का जन्म 23 अक्टूबर 1778 में हुआ था। उनकी शादी देसाई वंश के राजा मल्लासारजा से हुई। परंतु शीघ्र ही उनके पति और बाद में 1824 में उनके एकमात्र पुत्र की मृत्यु हो गई। इसके पश्चात उन्होंने एक अन्य बच्चे शिवलिंगप्पा को गोद ले लिया और अपनी गद्दी का वारिस घोषित किया। लेकिन साम्राज्य विस्तार की लालसा में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने इस कार्य को अस्वीकार्य घोषित कर दिया। हालांकि उस समय तक हड़प नीति लागू नहीं हुई थी, फिर भी ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने 1824 में कित्तुरु पर कब्जा करने के प्रयास शुरू कर दिए। ब्रिटिश शासन ने शिवलिंगप्पा को निर्वासित करने का आदेश दिया, लेकिन चेन्नम्मा ने अंग्रेजों का आदेश नहीं माना। जिसके बाद ब्रिटिश और कित्तुरु के बीच लड़ाई शुरू हो गई थी। संवाद

Dainik Jagran, Charkhi Dadri 22.02.2022

स्वतंत्रता सेनानी रानी चेन्नम्मा का 193वां शहीदी दिवस मनाया

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी रानी चेन्नम्मा के 193 वीं शहीदी दिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डा. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि अंग्रेजी साम्राज्य के खिलाफ विद्रोह का बिगुल बजाने वाली पहली महिला शासिका कित्तूर की रानी चेन्नम्मा थी। झलकारी बाई और लक्ष्मीबाई जैसा रण कौशल का परिचय देने वाली रानी चेन्नम्मा का जन्म 23 अक्टूबर, 1778 में हुआ था।

उनकी शादी देसाई वंश के राजा मल्लासारजा से हुई। परंतु शीघ्र ही उनके पति और बाद में 1824 में उनके एकमात्र पुत्र की मृत्यु हो गई। इसके पश्चात उन्होंने एक अन्य बच्चे शिवलिंगप्पा को गोद ले लिया और अपनी गद्दी का वारिस घोषित किया। लेकिन साम्राज्य विस्तार की लालसा में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने इस कार्य को अस्वीकार्य घोषित कर दिया।

74. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 146th Birth Anniversary of great social reformer Baba Sant Gadge on 23.02.2022 and delivered keynote address on "Social Reforms in Colonial India and Contribution of Baba Sant Gadge".

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 24-02-2022

झज्जर

बाबा संत गाडगे की 146वीं जयंती पर विद्यार्थियों को किया जागरूक

छुआछूत के खिलाफ आवाज बुलंद की थी समाज सुधारक बाबा संत गाडगे, डॉ. अमरदीप

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान समाज सुधारक बाबा संत गाडगे की 146वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि आजादी के संग्राम में संत गाडगे ने सामाजिक एवं मानवीय समानता का जोरदार आन्दोलन चलाया था। मानवता के सच्चे हितैषी, सामाजिक समरसता के प्रतीक संत गाडगे शिक्षा को सर्वाधिक महत्व देते हुए भारत एवं विश्व की सभी बुराइयों के अंत शिक्षित बनकर किया जा सकता है।

शिक्षा से अंधविश्वास समाप्त होगा और तभी इस अंधविश्वास से बर्बाद रहे समाज का संरक्षण हो सकता है। संत गाडगे महाराज का कहना था कि 'अगर पैसे की तंगी हो तो खाने के बर्तन बेच दो, औरत के लिए कम दाम के कपड़े खरीदो, टूटे-फूटे मकान में रहो परन्तु बच्चों को शिक्षा आवश्यक रूप से दे। 'जब सारा भारत अंग्रेजी साम्राज्य के खिलाफ राजनीतिक आजादी के लिए आंदोलनरत था तब भारत को सामाजिक एवं मानवीय आधार पर सुदृढ़ करने की मुहीम चलाई। उस समय अधिकतर भारतीय जनता अशिक्षा और अंधविश्वास जैसी बुराइयों से ग्रस्त थी ऐसे हालात में उनका स्पष्ट मानना था कि आजाद भारत शिक्षित होना चाहिए तभी भारत एवं मानवता का सम्पूर्ण विकास हो सकता है। इसलिए उन्होंने अपना सारा जीवन शिक्षा के लिए अर्पित कर दिया। शिक्षित भारत के प्रेरणा स्त्रोत बाबा गाडगे का जन्म 23 फरवरी 1876 को महाराष्ट्र के अमरावती जिले में हुआ था। उनका पूरा नाम डेबूजी झिंगराजी जानोरकर था।

वह एक घूमते फिरते सामाजिक शिक्षक थे। गणित के प्रोफेसर डा. नरेंद्र सिंह ने कहा कि गाडगे बाबा स्वैच्छिक गरीबी में रहते थे और अपने समय के दौरान सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने और विशेष रूप से स्वच्छता से संबंधित सुधारों की शुरुआत करने वाले विभिन्न गांवों में घूमते रहे। आज स्वच्छ भारत का नारा हर जगह गूंजता है उसकी शुरुआत कहीं न कहीं संत गाडगे के स्वच्छता अभियान से होती है जब वे गांव में प्रवेश करते ही नाले और सड़कों की सफाई शुरू कर देते थे। गाडगे महाराज ने महाराष्ट्र के कोने-कोने में अनेक धर्मशालाएं, गोशालाएं, विद्यालय, चिकित्सालय तथा छात्रावासों का निर्माण करवाकर नये भारत के निर्माण की मुहीम चलाई परन्तु अपने लिए पुरे जीवन में इस महापुरुष ने एक कुटिया तक नहीं बनवाई। मानवता के सच्चे उपासक संत गाडगे बाबा 20 दिसंबर 1956 में ब्रह्मलीन हो गए थे। इस विशेष कार्यक्रम में डॉ. नरेंद्र सिंह, जितेंद्र, संदीप कुमार इत्यादि ने भाग लिया।

समाज सुधारक के बारे में प्रकाश डालते हैं डॉक्टर अमरदीप सिंह।

अमर उजाला, चरखी दादरी 24.02.2022

महान समाज सुधारक थे बाबा संत गाडगे

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान समाज सुधारक बाबा संत गाडगे की 146 वीं जयंती के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया।

वक्ताओं ने कहा कि आजादी के संग्राम में संत गाडगे ने सामाजिक एवं मानवीय समानता के लिए आंदोलन चलाया था। उनका कहना था कि अगर पैसे की तंगी हो तो खाने के बर्तन बेच दो, कम दाम के कपड़े खरीदो, टूटे-फूटे मकान में रहो, परंतु बच्चों को शिक्षा आवश्यक रूप से दो। शिक्षित भारत के प्रेरणास्त्रोत बाबा गाडगे एक घूमते फिरते सामाजिक शिक्षक थे।

गाडगे महाराज ने महाराष्ट्र के कोने-कोने में अनेक धर्मशालाएं, गोशालाएं, विद्यालय, चिकित्सालय और छात्रावासों का निर्माण करवाकर नये भारत के निर्माण की मुहिम चलाई परंतु अपने लिए पूरे जीवन में इस महापुरुष ने एक कुटिया तक नहीं बनवाई। कार्यक्रम संरक्षक एवं महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. अनीता रानी ने कहा कि संत गाडगे ने लोगों से पशु बलि बंद करने का आह्वान किया और शराब के सेवन के खिलाफ अभियान चलाया। संवाद

75. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 8th Martyrdom of great warrior Kapish Singh Muwal on 26.02.2022 and delivered keynote address on "A saga of bravery and valour: Shourya Chakra Awardee Lieutenant Commander Shaheed Kapish Singh Muwal".

में उक्त व्यक्ति द्वारा लोन की किश्तें कंपनी ने शिकायत में बताया कि

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 27.2.22

लेफ्टिनेंट कमांडर कपीश सिंह मुवाल की शहादत को किया याद

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : शनिवार को आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में शहीद लेफ्टिनेंट कमांडर कपीश सिंह मुवाल के 8वें शहीदी दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम संयोजक व मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि शहीद लेफ्टिनेंट कमांडर कपीश ने कई सैनिकों की जान बचाकर देश हित में सर्वोच्च बलिदान दिया था। आजादी के बाद रतीय प्रभु सत्ता एवं स्वतंत्रता को अक्षुण्ण बनाए रखने में भारतीय सेनाओं की अहम भूमिका रही है। गांव बांडाहेड़ी मुंढाल व हिसार से संबंध रखने वाले भारतीय नौसेना के कमांडर ईश्वर सिंह के पुत्र कपीश मुवाल ने एनडीए की परीक्षा कर भारतीय सेना में शामिल हुए थे। भारतीय नौसेना में कपीश सिंह मुवाल ने 26 फरवरी 2014 को 3000 टन की आइएनएस सिंधु रत्न पनडुब्बी के कंपार्टमेंट पांच में उप विद्युत अधिकारी के रूप में कार्य किया। महाविद्यालय प्राचार्या डा. अनिता रानी ने कहा कि भारत के राष्ट्रपति ने कपीश सिंह मुवाल को अदम्य साहस, सूझबूझ एवं सर्वोच्च बलिदान के लिए शौर्य चक्र से सम्मानित किया।

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 27-02-2022

बिरोहड़ के राजकीय कॉलेज में शहीद लेफ्टिनेंट कमांडर कपीश का शहीदी दिवस मनाया

'बहादुर योद्धा थे कपीश मुवाल, अपनी जान न्योछावर कर नौसेना का गौरव भी बढ़ाया था'

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में शहीद लेफ्टिनेंट कमांडर कपीश सिंह मुवाल की 8वीं शहीदी दिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि शहीद लेफ्टिनेंट कमांडर कपीश सिंह 94 नौ सैनिकों की जान बचाकर देश हित में सर्वोच्च बलिदान का उदाहरण प्रस्तुत किया था। आजादी के पश्चात भारतीय प्रभुसत्ता एवं स्वतंत्रता को अक्षुण्ण बनाए रखने में भारतीय सेनाओं की अहम भूमिका रही। आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रम में इतिहास के साथ साथ आजादी के पश्चात महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले बहादुर योद्धाओं के जीवन पर भी प्रकाश डाला जा रहा है। इसी कड़ी में ऐसा ही एक बहादुर योद्धा कपीश सिंह मुवाल थे जिन्होंने अदम्य साहस एवं सुझबूझ से एक बहुत बड़ी दुर्घटना को ही नहीं रोका बल्कि अपने नौ सैनिक कर्मियों के जीवन रक्षा हेतु अपनी जान न्योछावर करके भारतीय नौसेना के गौरव को भी बढ़ाया।

झज्जर. बिरोहड़ गांव के राजकीय कॉलेज शहीदों के बारे में विचार व्यक्त करते अतिथि।

एनडीए परीक्षा पास टॉपर रहे मेधावी छात्र कपीश को स्वोर्ड ऑफ हॉनर से सम्मानित किया था

गांव बांडाहेड़ी मुंढाल, हिसार से संबंध रखने वाले भारतीय नौसेना के कमांडर ईश्वर सिंह के पुत्र कपीश मुवाल बचपन से ही मेधावी छात्र थे और एनडीए की परीक्षा पास करने के बाद टॉपर रहने पर उन्हें स्वोर्ड ऑफ़ हॉनर से सम्मानित किया गया था। भारतीय नौसेना में लेफ्टिनेंट कमांडर कपीश सिंह मुवाल ने 26 फरवरी 2014 को 3000 टन की आई एनएस सिंधुरत्न पनडुब्बी के कंपार्टमेंट 5 में उपविद्युत अधिकारी के रूप में कार्यरत था। सुबह तकरीबन 5 बजे कंपार्टमेंट 3 से धुआं निकलने की खबर मिलने पर वह सबसे पहले घटनास्थल पर पहुंचे। 13 नौसैनिक कर्मियों व लेफ्टिनेंट कमांडर मनोरंजन कुमार ने लेफ्टिनेंट कमांडर कपीश के साथ मिलकर आग बुझाने का कार्य करने लगे। परन्तु जब आग बुझने की बजाय बढ़ने लगी तो कपीश सिंह मुवाल ने सभी कर्मियों को बाहर जाने का आदेश दिया और स्वयं व मनोरंजन कुमार के साथ मिलकर आग बुझाने के प्रयास करने लगे। परन्तु आग की तीव्रता बढ़ती ही गयी। इसके साथ ही उन्होंने पनडुब्बी में सवार 94 नौसैनिकों की जान बचाकर भारतीय नौसेना के इतिहास को भी गौरवान्वित किया। इस कार्यक्रम के संरक्षक और महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि भारत के राष्ट्रपति ने कपीश सिंह मुवाल को अदम्य साहस, सूझबूझ एवं सर्वोच्च बलिदान को सम्मानित करते लेफ्टिनेंट कमांडर कपीश सिंह मुवाल को शौर्य चक्र (मरणोपरांत) से अलंकृत किया।

76. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 91st Martyrdom of great freedom fighter and revolutionary Chandra Shekhar Azad, 94th Birth Anniversary of Great Social Reformer Dinabhana and 63rd Death Anniversary of Great Freedom Fighter and First President of Independent India Dr. Rajendra Prasad on 28.02.2022 and delivered keynote address on "Life and Struggle of Chandra Shekhar Azad, Dinabhana and Dr. Rajendra Prasad: Their Contribution in Making of New India".

jhajjarabhitaklive.com/2022/02/28/haryana-abhitak-news-28-02-22/

Haryana Abhitak News 28/02/22

शहीद चन्द्रशेखर आजाद भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन के चमकते सितारे थे : डा. अमरदीप

झज्जर, 28 फरवरी (अभीतक) : सोमवार को आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद के 91 वें शहीदी दिवस, महान समाज सुधारक दिनाभाना के 94 वें जन्मदिवस एवं महान स्वतंत्रता सेनानी डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की 63 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डा. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि शहीद चन्द्रशेखर आजाद भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन के चमकते सितारे थे। बचपन से ही आज़ाद भारत का सपना अपनी आँखों में संजोये चंद्रशेखर आजाद ने समस्त भारत के क्रांतिकारियों को न केवल एक सूत्र में बांधा बल्कि उन्हें एक संगठित ताकत का स्वरुप देकर अंग्रेजी साम्राज्य को भी हिला डाला। दुसरे चरण के क्रांतिकारी आन्दोलन को आजाद ने न केवल बम की राजनीति से सशक्त किया साथ ही इसे वैचारिक आधार से मजबूत भी किया। 1920 के असहयोग आन्दोलन की विफलता से आजाद ने बम और पिस्तौल की राजनीति में विश्वास करना प्रारम्भ कर दिया और इसी कारण हिंदुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन के माध्यम से क्रांतिकारी आन्दोलन में जान फूंकी। भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को जेल से बाहर निकालने का प्रयास भी किया परन्तु भगत सिंह द्वारा इस योजना को अस्वीकार दिया गया। इसी दौरान 27 फरवरी 1931 को तत्कालीन अल्फ्रेड पार्क में अंग्रेजी सिपाहियों द्वारा घेर लिए जाने पर अंतिम साँस तक उनका डटकर मुकाबला किया और जब आखिरी गोली रह गई तो आजाद रहने और मरने की अपनी शपथ को पूरा करते हुए, स्वयं को अंतिम गोली मारकर शहीद हो गये परन्तु अंग्रेजो की गिरफ्त में नही आये। इस कार्यकम के दुसरे चरण में भूगोल प्राध्यापक पवन कुमार ने महान समाजसेवी दिनाभाना के जीवन चरित पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अगर दिनाभाना नहीं होते तो डा. अम्बेडकर के महापरिनिर्वाण के पश्चात न मान्यवर कांशीराम साहब का उदय होता और न ही बहुजन आन्दोलन उभरता। 28 फरवरी 1928 को राजस्थान में जन्मे दिनाभाना समाज में फैली समानता, सामाजिक-धार्मिक अन्धविश्वास को जड़ से समाप्त करना चाहते थे। पूना में रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन के कर्मचारी के रूप में कार्यरत रहते हुए 14 अप्रैल को डा. भीम राव आंबेडकर जयंती पर छुट्टी के विवाद ने दीनाभाना और दलित आन्दोलन का नया स्वरूप दिया। इसी विवाद ने डीके खापर्डे और कांशीराम का उदय किया। बामसेफ के संस्थापक सदस्य दीना भाना ने कांशीराम साहब को बाबा साहब आंबेडकर के व्यक्तित्व व कृतित्व से परिचित करवाया और कांशीराम साहब के अंदर छिपी बहुजन नेतृत्व की भावना को सुप्तावस्था से जाग्रत कर देश को एक समर्थ बहुजन नेतृत्व दिलवाने का ऐतिहासिक कार्य किया। दीना भाना ने अपनी छोटी सी नौकरी होने के बावजूद जिस तरीके से खुद को बाबा साहब को समर्पित कर रखा था उसी की बदौलत आज अम्बेडकरी आन्दोलन कायम है। इस कार्यकम के अंतिम चरण में डा. राजेन्द्र प्रसाद के जीवन पर विचार रखते हुए इतिहास प्राध्यापक जितेन्द्र ने कहा कि 1884 में जन्मे राजेन्द्र प्रसाद बचपन से जुझारू एवं आन्दोलनकारी प्रवृति के धनी थे। उन्होंने 1920 के असहयोग आन्दोलन, 1930 के नमक सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा आन्दोलन और भारत छोडो आन्दोलन में भाग लिया और कई बार जेल भी गये। महात्मा गाँधी ने उन्हें अपना सहयोगी जे रूप में चुना और साबरमती आश्रम के तर्ज पर सदाकत आश्रम की एक नई प्रयोगशाला का दायित्व भी सौंपा। महाविद्यालय के बर्सर डा. नरेंद्र सिंह ने कहा कि राजेन्द्र प्रसाद निर्विवाद रूप से भारतीय संविधान की निर्मात्री सभा के सभापति चुने गये थे और आज़ादी के पश्चात प्रथम राष्ट्रपति एवं लगातार दो बार इस पद पर बने रहने का अवसर उन्हंप उनकी जीवटता और महानता के कारण मिला। इस कार्यक्रम की संरक्षक और महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि चन्द्र शेखर आजाद एवं डा. राजेन्द्र प्रसाद ने जहाँ भारत के लिए राजनीतिक आज़ादी के लिए संघर्ष किया वही दिनाभाना ने भारत में सामाजिक आज़ादी के लिए आन्दोलन किया और नई दिशा प्रदान की। इस अवसर पर जितेन्द्र, डा. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार इत्यादि उपस्थित रहे।

77. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 91st Death Anniversary of formation of Chamar Regiment on 02.03.2022 and delivered keynote address on "Roe of Chamar Regiment in Freedom Struggle".

jhajjarabhitaklive.com/2022/03/02/haryana-abhitak-news-02-03-22/

Haryana Abhitak News 02/03/22

चमार रेजिमेंट के सिपाहियों ने अंग्रेजी साम्राज्य के खिलाफ बिगुल बजाकर आज़ाद हिन्द फ़ौज का साथ दिया था: डॉ. अमरदीप

झज्जर, 02 मार्च (अभीतक) : बुधवार को आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में चमार रेजिमेंट की स्थापना 79 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि चमार रेजिमेंट के सिपाहियों ने अंग्रेजी साम्राज्य के खिलाफ बिगुल बजाकर आज़ाद हिन्द फ़ौज का साथ दिया था। प्रथम चमार रेजिमेंट द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अंग्रेजों द्वारा गठित एक पैदल सेना रेजिमेंट थी। आधिकारिक तौर पर, यह 1 मार्च 1943 को बनाई गई थी, और इसे 27वीं बटालियन दूसरी पंजाब रेजिमेंट के रूप में परिवर्तित कर दिया गया था। चमार रेजिमेंट के एकमात्र जीवित योद्धा महेंद्रगढ़ निवासी चुन्नीलाल के अनुसार कोहिमा में चमार रेजीमेंट ने अंग्रेजों की ओर से 1944 में जापानियों के खिलाफ लड़ाई लड़ी और यह इतिहास की सबसे खूंखार लड़ाईयों में से एक थी। उस समय दुनिया की सबसे ताकतवर सेना जापान की मानी जाती थी और जापान को हराने के लिए अंग्रेजों ने इसका इस्तेमाल किया। कोहिमा के मोर्चे पर इस रेजीमेंट ने सबसे बहादुरी से लड़ाई लड़ी और इसलिए इसे बैटल ऑफ कोहिमा अवार्ड से नवाजा गया। बाद में अंग्रेजों ने इसे आजाद हिंद फौज से मुकाबला करने के लिए सिंगापुर भेजा। चमार रेजीमेंट का नेतृत्व कैप्टन मोहनलाल कुरील कर रहे थे। कैप्टन कुरील ने देखा कि अंग्रेज चमार रेजीमेंट के सैनिकों के हाथों अपने ही देशवासियों को मरवा रहे हैं। इसके बाद उन्होंने इसको आईएनए में शामिल कर अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध करने का निर्णय लिया। तब अंग्रेजों ने 1946 में इस पर प्रतिबंध लगा दिया। इस कार्यक्रम की संरक्षक और महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि आज़ादी के आन्दोलन में चमार रेजिमेंट ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी और इसने आजाद हिन्द फ़ौज के साथ मिल कर आज़ादी को नजदीक लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

78. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 117 Birth Anniversary of great freedom fighter and revolutionary Sushila Didi on 05.03.2022 and delivered keynote address on "women participation in Indian Freedom Struggle and Role of Sushila Didi".

दैनिक भास्कर

झज्जर भास्कर 06-03-2022

क्रांतिकारी सुशीला का 117वां जन्मदिवस मनाया

झज्जर | आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान क्रांतिकारी सुशीला दीदी के 117 वें जन्मदिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि सुशीला दीदी ने क्रांतिकारी आन्दोलन को सफल बनाने के लिए अपनी शादी के गहने तक दान कर दिए थे। 5 मार्च 1905 में पंजाब में जन्मी सुशीला दीदी के पिता डॉ. करमचंद अंग्रेजों की सेना में मेडिकल अफसर थे और उन्होंने सुशीला को क्रांतिकारी गतिविधियों से रोका तो सुशीला दीदी ने साहसपूर्ण जवाब दिया था कि घर छूटे तो छूटे लेकिन देश को आजादी दिलाए बिना, उनके कदम नहीं रुकेंगे। सुशीला की शिक्षा जालंधर कन्या विद्यालय से हुई और उन्हें देशभक्ति की प्रेरणा इसी विद्यालय की प्राचार्य कुमारी लज्जावती से मिली। सुशीला की देशभक्ति देखकर उनके स्कूल की प्राचार्य लज्जावती ने ही उनकी भेंट दुर्गा भाभी से कराई। इसके पश्चात सभी क्रांतिकारियों के लिए सुशीला दीदी और दुर्गा भाभी हो गई। काकोरी कांड के क्रांतिकारियों को बचाने के लिए सुशीला दीदी ने मां द्वारा उनकी शादी के लिए रखा गया 10 तोला सोना मुकदमे की पैरवी के लिए दे दिया। स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के पश्चात सुशीला कलकत्ता चली गई।

Dainik Jagran, Charkhi Dadri, 06.03.2022

स्वतंत्रता सेनानी सुशीला दीदी ने आजादी के लिए दान कर दिए थे गहने : अमरजीत

- आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में हुआ कार्यक्रम
- पांच मार्च 1905 में पंजाब में हुआ था सुशीला का जन्म, पिता अंग्रेजी सेना में थे मेडिकल अफसर

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में क्रांतिकारी सुशीला के बारे में बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में शनिवार को स्वतंत्रता सेनानी सुशीला दीदी के 117वें जन्मदिवस के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि सुशीला दीदी ने आजादी आंदोलन को सफल बनाने के लिए अपनी शादी के तमाम गहने तक दान कर दिए थे।

पांच मार्च 1905 में पंजाब में जन्मी सुशीला दीदी के पिता डा. कर्मचंद अंग्रेजों की सेना में मेडिकल अफसर थे और उन्होंने सुशीला को क्रांतिकारी गतिविधियों से रोका तो सुशीला दीदी ने साहसपूर्ण जवाब दिया था कि घर छूटे तो छूटे लेकिन देश को आजादी दिलाए बिना उनके कदम नहीं रुकेंगे। सुशीला की शिक्षा जालंधर कन्या विद्यालय से हुई और उन्हें देशभक्ति की प्रेरणा इसी विद्यालय की प्राचार्य कुमारी लज्जावती से मिली।

सुशीला की देशभक्ति देखकर उनके स्कूल की प्राचार्य लज्जावती ने ही उनकी भेंट दुर्गा भाभी से कराई। इसके बाद सभी क्रांतिकारियों के लिए सुशीला दीदी और दुर्गा भाभी हो गईं। काकोरी कांड के क्रांतिकारियों को बचाने के लिए सुशीला दीदी ने मां द्वारा उनकी शादी के लिए रखा गया 10 तोला सोना मुकदमे की पैरवी के लिए दे दिया। स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद सुशीला कलकत्ता चली गई। वहीं उन्होंने शिक्षिका की नौकरी भी कर ली और वह गुप्त रूप से क्रांतिकारियों की मदद करती रहीं। वर्ष 1928 में सांडर्स वध के बाद भगत सिंह और दुर्गा भाभी जब भेष बदलकर लाहौर से कलकत्ता पहुंचे तो भगवती चरण वोहरा और सुशीला दीदी ने स्टेशन पर उनका स्वागत किया। यही नहीं कलकत्ता में उनके ठहरने का इंतजाम भी सुशीला दीदी ने ही किया। इतिहास प्राध्यापक जितेंद्र ने कहा कि भगत सिंह के मुकदमे की पैरवी के लिए फंड जुटाने से लेकर चंद्रशेखर आजाद की सलाह पर भगत सिंह और उनके साथियों को छुड़ाने के लिए गांधी इरविन समझौते में भगत सिंह की फांसी को कारावास में बदलने की शर्त लेकर सुशीला दीदी महात्मा गांधी से मिलने तक गईं। लेकिन गांधी ने इस शर्त को समझौते में रखने से साफ इंकार कर दिया था। महाविद्यालय प्राचार्या डा. अनीता रानी ने कहा कि वीरांगना सुशीला दीदी स्वाधीनता के बाद आर्थिक अभाव व खराब स्वास्थ्य के चलते 13 जनवरी 1963 को इस दुनिया को अलविदा कह गईं। इस अवसर पर जितेंद्र, डा. नरेंद्र सिंह, डा. राजपाल गुलिया इत्यादि भी उपस्थित रहे।

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 06-03-2022

'क्रांतिकारियों के लिए सुशीला दीदी और दुर्गा भाभी हो गईं'

कॉलेज में क्रांतिकारी सुशीला दीदी के117वें जन्मदिवस पर हुआ कार्यक्रम

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में क्रांतिकारी सुशीला दीदी के117वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि सुशीला दीदी ने क्रांतिकारी आन्दोलन को सफल बनाने के लिए अपनी शादी के गहने तक दान कर दिए थे। 5 मार्च 1905 में पंजाब में जन्मी सुशीला दीदी के पिता डॉ. करमचंद अंग्रेजों की सेना में मेडिकल अफसर थे। उन्होंने सुशीला को क्रांतिकारी गतिविधियों से रोका तो सुशीला दीदी ने साहसपूर्ण जवाब दिया था कि घर छूटे तो छूटे लेकिन देश को आजादी दिलाए बिना, उनके कदम नहीं रुकेंगे।

सुशीला की शिक्षा जालंधर कन्या विद्यालय से हुई और उन्हें देशभक्ति की प्रेरणा प्राचार्य कुमारी लज्जावती से मिली। सुशीला की देशभक्ति देखकर उनके प्राचार्य लज्जावती ने ही उनकी भेंट दुर्गाभाभी से कराई। इसके पश्चात सभी क्रांतिकारियों के लिए सुशीला दीदी और दुर्गा भाभी हो गईं। काकोरी कांड के क्रांतिकारियों को बचाने के लिए सुशीला दीदी ने मां द्वारा उनकी शादी के लिए रखा गया 10 तोला सोना मुकदमे की पैरवी के लिए दे दिया। स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के पश्चात सुशीला कलकत्ता चली गईं। वहीं उन्होंने शिक्षिका की नौकरी भी कर ली और वह गुप्त रूप से क्रांतिकारियों की मदद करती रहीं। वर्ष 1928 में सांडर्स वध के बाद भगत सिंह और दुर्गा भाभी जब भेष बदलकर लाहौर से कलकत्ता पहुंचे तो भगवतीचरण वोहरा और सुशीला दीदी ने स्टेशन पर उनका स्वागत किया। यही नहीं कलकत्ता में उनके ठहरने का इंतजाम भी सुशीला दीदी ने ही किया। प्राध्यापक जितेंद्र ने कहा कि लाहौर षड्यंत्र केस में गिरफ्तारी के पश्चात भगत सिंह के मुकदमे की पैरवी के लिए फंड जुटाने से लेकर चंद्रशेखर आजाद की सलाह पर भगत सिंह और उनके साथियों को छुड़ाने के लिए गांधी-इरविन समझौते में भगत सिंह की फांसी को कारावास में बदलने की शर्त लेकर सुशीला दीदी महात्मा गांधी से मिलने तक गईं, किंतु गांधी ने इस शर्त को समझौते में रखने से साफ इंकार कर दिया था। प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि देश की आजादी में अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाली वीरांगना सुशीला दीदी स्वाधीनता के पश्चात आर्थिक अभाव व खराब स्वास्थ्य के चलते 13 जनवरी, 1963 को इस दुनिया से अलविदा कह गईं।

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते वक्ता।

79. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 60th Death Anniversary of great freedom fighter and revolutionary Ambika Chakravarty on 07.03.2022 and delivered keynote address on "Revolutionary Movement in Colonial India: Role of Ambika Chakravarty".

दैनिक भास्कर चरखी दादरी 08-03-2022

अंबिका चक्रबर्ती ने अपने विद्यालयी जीवन में ही सर्वस्व देश पर न्योछावर किया: डॉ. अमरदीप

बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में महान क्रांतिकारी की पुण्यतिथि पर कार्यक्रम का आयोजन

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में महान क्रांतिकारी अंबिका चक्रबर्ती की 60वीं पुण्यतिथि पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि चटगांव शस्त्रागार पर हमला कर अंग्रेजी सरकार को नाको चने चबाने के लिए मजबूर करने वाले क्रांतिकारियों के दल में से एक प्रसिद्ध क्रांतिकारी अंबिका चक्रबर्ती का जन्म 1892 में हुआ था।

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में विद्यार्थियों को संबोधित करते वक्ता।

अंबिका चक्रबर्ती अपने विद्यालयी जीवन से ही देश के लिए सर्वस्व न्योछावर करने के बारे में सोचने लगे थे इसलिए कांग्रेस के अहिंसात्मक आंदोलन की बजाय उनका झुकाव सशस्त्र क्रांति की तरफ हो गया।शीघ्र ही उनका जुड़ाव चटगांव में क्रांति की पाठशाला और भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन के महान योद्धा मास्टर सूर्यसेन मास्टर दा से हो गया जिसके बाद अंबिका चक्रबर्ती के जीवन में क्रांतिपथ का राही बनने के अतिरिक्त अन्य कोई अभिलाषा शेष रही ही नहीं। अंग्रेजी सरकार की चूलें हिलाने के लिए मास्टर दा ने अपने साथियों के साथ चटगांव शस्त्रागार पर आक्रमण करने की एक ऐसी योजना बनाई जिसके बारे में सोचकर भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं। 18 अप्रैल 1930 को पूर्व निश्चित योजना मास्टर सूर्यसेन के नेतृत्व में आनंद गुप्ता, अर्धेन्दु दस्तीदार, अनंत सिंह, कल्पना दत्त, प्रीतिलता वाडेदार, शशांक दत्त, नरेश राय, निर्मल सेन, जीबन घोषाल, तारकेश्वर दस्तीदार, सुबोध राय, हरगोपाल बल, लोकनाथ बल, गणेश घोष एवं अंबिका चक्रवर्ती आदि ने चटगांव शस्त्रागार पर आक्रमण किया। मास्टर दा के निर्देश पर अंबिका चक्रवर्ती ने अपने कुछ साथियों के साथ उस पूरे इलाके की संचार व्यवस्था को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया ताकी अंग्रेजी प्रशासन को सूचनाओं के आदान प्रदान में कठिनाइयों का सामना करना पड़े और इस स्थिति का लाभ उठाकर क्रांतिकारी अपनी स्थिति को मजबूत कर सकें। महाविद्यालय के बर्सर डा. नरेंद्र सिंह ने कहा कि 22 अप्रैल 1930 को जलालाबाद में अंग्रेजी पुलिस के साथ हुई एक मुठभेड़ में वे बुरी तरह से घायल हो गए पर बच निकलने में कामयाब रहे। परंतु कुछ माह बाद पुलिस ने उनके छिपने के स्थान को खोज निकाला और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

Amar Ujala, Charkhi Dadri, 8.3.2022

स्वतंत्रता सेनानी अंबिका चक्रवर्ती को किया नमन

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान क्रांतिकारी अंबिका चक्रवर्ती की 60 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि प्रसिद्ध क्रांतिकारी अंबिका चक्रवर्ती का जन्म 1892 में हुआ था। अंबिका चक्रवर्ती अपने विद्यालयी जीवन से ही देश के लिए सर्वस्व न्योछावर करने के बारे में सोचने लगे थे, इसलिए कांग्रेस के अहिंसात्मक आंदोलन के बजाय उनका झुकाव सशस्त्र क्रांति की तरफ हो गया।

उन्होंने अपने साथियों के साथ चटगांव शस्त्रागार पर आक्रमण करने की विशेष योजना बनाई थी। गणित के प्रोफेसर डॉ. नरेंद्र सिंह ने कहा कि 22 अप्रैल 1930 को जलालाबाद में अंग्रेजी पुलिस के साथ हुई एक मुठभेड़ में वे बुरी तरह से घायल हो गए, पर बच निकलने में कामयाब रहे। कुछ माह बाद पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर अंडमान की सेल्युलर जेल भेज दिया। महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. अनीता रानी ने कहा कि 1946 में अपनी मुक्ति के पश्चात अंबिका चक्रवर्ती कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गए और शोषित वर्ग के लिए कार्य करने लगे। कार्यक्रम में डॉ. नरेंद्र सिंह, जितेंद्र, संदीप कुमार आदि मौजूद रहे। संवाद

80. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 125th Mahaparinirvana Diwas of great freedom fighter and social reformer Savitribai Phule on 10.03.2022 and delivered keynote address on "Role of Savitribai Phule in the Making of Modern India".

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 11-03-2022

झज्जर

सावित्रीबाई फुले ने शिक्षा की अखंड ज्योति जला बदलाव को जन्म दिया

अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में महापरिनिर्वाण दिवस मनाया

भास्कर न्यूज | साल्हावास

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान समाज सुधारिका एवं आधुनिक भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले के 125वें महापरिनिर्वाण दिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि सावित्रीबाई फुले ने आधुनिक समाज की नींव शिक्षा की अखंड ज्योति जलाकर बदलाव की एक बड़ी लहर को जन्म दिया। सावित्रीबाई फुले का जन्म 1831 में महाराष्ट्र के सतारा के नयागांव में एक किसान परिवार में हुआ था। 19 वीं सदी में जहां एक और राजा राम मोहन राय जैसे अनेक सुधारक सामाजिक धार्मिक आन्दोलन चला रहे थे वहीं दूसरी और ज्योतिबा फुले और उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले ने सामाजिक एवं शैक्षणिक क्षेत्र में ढांचागत एवं संस्थागत परिवर्तन की नींव रखी। इतिहास प्राध्यापक जितेन्द्र ने कहा कि शिक्षा समाज सुधार का मूल तत्व है। महाविद्यालय के बर्सर डॉ. नरेंद्र सिंह ने कहा कि सावित्रीबाई न केवल एक समाज सुधारक थीं बल्कि वह एक महान दार्शनिक और कवयित्री भी थीं। इस कार्यक्रम की अध्यक्षा और महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि 1897 में पुणे में प्लेग फैला था और इसी महामारी में स्वयंसेवा करते हुए से 66 वर्ष की उम्र में सावित्रीबाई फुले का 10 मार्च 1897 को पुणे में महापरिनिर्वाण हो गया था। इस कार्यक्रम में पवनकुमार, डॉ. नरेन्द्र सिंह, जितेन्द्र, संदीप कुमार उपस्थित रहे।

राजकीय कॉलेज बिरोहड़ में सेमिनार, बच्चों को सावित्रीबाई फुले के बारे में जानकारी देते हुए ।

राजकीय स्कूल में सावित्री बाई फुले की पुण्यतिथि पर विचार गोष्ठी

बहादुरगढ़ | राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय लुक्सर में देश की पहली शिक्षिका एवं महान समाज सुधारक माता सावित्री बाई फुले की पुण्यतिथि प्राचार्या संगीता वर्मा की अध्यक्षता में मनाई गई। प्राचार्या ने उनके चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की और समाज में उनके योगदान का स्मरण किया। इस दौरान महिला सशक्तीकरण विषय पर विचार गोष्ठी भी हुई। विचार गोष्ठी में प्राचार्या संगीता वर्मा ने कहा कि सावित्री बाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 को महाराष्ट्र के सतारा में हुआ था। फुले ने भारत में सामाजिक सुधार आंदोलन और महिलाओं को शिक्षित करने में अग्रणी भूमिका निभाई। सावित्री बाई फुले भारत की प्रथम महिला शिक्षिका ही नहीं बल्कि वे समाज सेविका और कवयित्री भी थी। उन्होंने सम्पूर्ण जीवन महिलाओं के उत्थान के लिए ही समर्पित कर दिया था। उनका निधन 10 मार्च 1897 के दिन हुआ था। विद्यालय के शिक्षक वर्ग एवं बच्चों ने उनके बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। इस अवसर पर प्राध्यापक धर्मेन्द्र, नीरज, अनिल , प्राध्यापिका मीनाक्षी, मंजू, आशा उपस्थित रही।

पुण्यतिथि पर विचार गोष्ठी में मौजूद छात्र।

अमर उजाला, चरखी दादरी 11.03.2022

सावित्रीबाई फुले का महापरिनिर्वाण दिवस मनाया

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान समाज सुधारिका एवं आधुनिक भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले के 125 वें महापरिनिर्वाण दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। वक्ता संदीप कुमार ने कहा कि सावित्रीबाई फुले का जन्म 1831 में महाराष्ट्र के सतारा के नायगांव में किसान परिवार में हुआ था। 19 वीं सदी में जहां एक ओर राजा राममोहन राय जैसे अनेक सुधारक सामाजिक धार्मिक आंदोलन चला रहे थे। वहीं दूसरी और ज्योतिबा फुले और उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले ने सामाजिक एवं शैक्षणिक क्षेत्र में ढांचागत एवं संस्थागत परिवर्तन की नींव रखी। संवाद

81. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 92nd Anniversary of Dandi March on 12.03.2022 and delivered keynote address on "Role of Salt March in Awakening of Indians against British Rule".

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 14-03-2022

बिरोहड़ में विद्यार्थियों को बताया आजादी का इतिहास

झज्जर | बिरोहड़ गांव स्थित राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग में नमक सत्याग्रह 92वीं वर्षगांठ पर विशेष कार्यक्रम किया गया। भारत सरकार की मुहिम के आजादी का अमृत महोत्सव के जरिए आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि मामूली सा दिखने वाले नमक ने सबसे मजबूत ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला थी। इतिहास प्राध्यापक जितेंद्र ने कहा कि 8 मार्च को महात्मा गांधी कहा था कि "यह मेरे लिए मात्र एक कदम है, पूर्ण स्वराज की और"। तब ब्रिटिश सरकार को यह तनिक भी अहसास नहीं था कि यह आंदोलन भारत में उनकी चूलें तक हिला देगा। प्राचार्या डॉ. अनीता रानी व डॉ. नरेंद्र सिंह ने विचार रखे। इस अवसर पर जितेन्द्र, संदीप कुमार आदि लोग उपस्थित रहे।

rkhi Dadr 22

www.jagran.com

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 13.3.22

विद्यार्थियों को दी आजादी के आंदोलन से जुड़ीं जानकारियां

बिरोहड़ के सरकारी कालेज में विद्यार्थियों को संबोधित करते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति।

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग द्वारा भारत सरकार की मुहिम के आजादी का अमृत महोत्सव के तहत नमक सत्याग्रह की 92वीं वर्षगांठ के अवसर पर शनिवार को कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि नमक सत्याग्रह ने सबसे मजबूत ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला थी। 1882 के नमक कानून द्वारा अंग्रेजों ने नमक के उत्पादन एवं बिक्री पर एकाधिकार स्थापित किया था। महात्मा गांधी ने 12 मार्च 1930 को दांडी मार्च प्रारंभ करते हुए कहा कि तब नमक था अब हवा और पानी पर भी अंग्रेज अपना नियंत्रण स्थापित करने वाले हैं। महात्मा गांधी ने नमक के प्रश्न पर सभी भारतीयों को एकजुट करने का विचार रखा हालांकि आरंभ में कांग्रेस वर्किंग कमेटी और वायसराय लार्ड इर्विन ने भी इसे ज्यादा तव्वजो नहीं दी थी। लेकिन महात्मा गांधी ने इसके लिए पूरी तैयारी की थी। जिनमें से दक्षिण अफ्रीका से मणिलाल गांधी एवं 31 स्वयंसेवक गुजरात से, 13 महाराष्ट्र से और कम से कम एक स्वयंसेवक सयुंक्त प्रांत, केरल, पंजाब, सिंध, बंगाल, बिहार और उड़ीसा इत्यादि से चुने गए थे। इतिहास प्राध्यापक जितेंद्र डा. नरेंद्र सिंह, प्राचार्या डा. अनिता रानी संदीप कुमार ने भी विचार रखे।

दैनिक भास्कर

चरखी दादरी भास्कर 13-03-2022

• राजकीय महाविद्यालय में नमक सत्याग्रह की 92वीं वर्षगांठ पर कार्यक्रम

नमक ने हिला दी थी ब्रिटिश साम्राज्य की नींव

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में नमक सत्याग्रह की 92वीं वर्षगांठ पर कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि मामूली सा दिखने वाले नमक ने सबसे मजबूत ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला थी। 1882 के नमक कानून के द्वारा अंग्रेजों ने नमक के उत्पादन एवं बिक्री पर एकाधिकार स्थापित किया था। महात्मा गांधी ने 12 मार्च 1930 को दांडी मार्च प्रारंभ करते हुए कहा कि तब नमक था, अब हवा और पानी भी अंग्रेज अपना नियंत्रण स्थापित करने वाले है। महात्मा गांधी ने नमक के प्रश्न पर सभी भारतीयों को एकजुट करने का विचार रखा हालांकि आरंभ में कांग्रेस वर्किंग कमेटी और वायसराय लार्ड इर्विन ने भी इसे ज्यादा तवज्जों नहीं दी थी। परंतु महात्मा गांधी ने इसके लिए संपूर्ण तैयारी की थी, इस मार्च के 78 स्वयं सेवक चुने गये जिनमें से दक्षिण अफ्रीका से मणिलाल गांधी एवं 31 स्वयं सेवक गुजरात से, 13 महाराष्ट्र से और कम से कम एक स्वयं सेवक संयुक्त प्रांत, केरल, पंजाब, सिंध, बंगाल, बिहार और ओडिशा इत्यादि से चुने गये थे। इसके साथ साथ इमने हिंदू, मुस्लिम, सिख समेत सभी जातियों और अछूत वर्ग इत्यादि का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करके इस आंदोलन को संपूर्ण भारत का आंदोलन बनाने का प्रयास किया गया, जो सफल भी रहा। प्राध्यापक जितेन्द्र ने कहा कि 8 मार्च को महात्मा गांधी कहा था कि यह मेरे लिए मात्र एक कदम है, पूर्ण स्वराज की और।

डॉ. नरेंद्र सिंह ने बताया कि महात्मा गांधी ने 6 अप्रैल 1930 को दांडी में समुद्र किनारे हाथ से प्राकृतिक नमक बनाकर कहा था कि इस नमक से मैं ब्रिटिश साम्राज्य को गर्त की और धकेल रहा हूं। प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि नमक आंदोलन के प्रभाव से सभी समुद्र तटों पर जनता ने नमक कानून का उल्लघंन किया और मैदानी इलाकों ने भूमिकर, चौकीदारी कर व अन्य करों का बहिष्कार करके महात्मा गांधी के आंदोलन को मजबूती दी गई।

राजकीय महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में मौजूद छात्राएं।

अमर उजाला, चरखी दादरी 13.03.2022

न्यूज डायरी

विद्यार्थियों को दी नमक सत्याग्रह की जानकारी

चरखी दादरी। बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में शनिवार को नमक सत्याग्रह की 92वीं वर्षगांठ पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। आयोजन में इतिहास प्राध्यापक जितेंद्र कुमार ने विद्यार्थियों को नमक सत्याग्रह की जानकारी दी। कहा कि 1882 के नमक कानून के जरिये अंग्रेजों ने नमक के उत्पादन एवं बिक्री पर एकाधिकार स्थापित किया था। महात्मा गांधी ने 12 मार्च 1930 को दांडी मार्च प्रारंभ करते हुए कहा कि तब नमक था और अब हवा और पानी पर भी अंग्रेज अपना नियंत्रण स्थापित करने वाले हैं। बर्सर डॉ. नरेंद्र सिंह ने बताया कि महात्मा गांधी ने 6 अप्रैल 1930 को दांडी में समुद्र किनारे हाथ से प्राकृतिक नमक बनाकर कहा था कि इस नमक से मैं ब्रिटिश साम्राज्य को गर्त की और धकेल रहा हूं। तब से यह आंदोलन जन आंदोलन बन गया। आयोजन की अध्यक्षता महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने की। इस अवसर पर जितेंद्र व संदीप भी मौजूद रहे। संवाद

82. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 108th Birth Anniversary of great freedom fighter and officer of Indian National Army Colonel Guru Baksh Singh on 19.03.2022 and delivered keynote address on "Role of INA in Indian Freedom Struggle: A Special Reference to achievements of Colonel Guru Baksh Singh".

आदि लोग उपस्थित रहे।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 20.03.2022

कर्नल गुरुबख्श सिंह ढिल्लो के शौर्य को किया याद

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी कर्नल गुरुबख्श सिंह ढिल्लो की 108वीं जयंती के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि कर्नल ढिल्लो आजाद हिंद फ़ौज की नेहरू ब्रिगेड के कमांडर थे। जिन्होंने अपने कुशल नेतृत्व से अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए थे। गुरबख्श सिंह ढिल्लो का जन्म 1914 में पंजाब के तरणतारण जिले में हुआ था। उनका सपना था कि वे चिकित्सक बनें लेकिन सन 1933 में वे इंडियन आर्मी के लिए सेलेक्ट हो गए और उन्हें 14वीं पंजाब रेजीमेंट में सेलेक्ट किया गया था। ट्रेनिंग के बाद 1941 में द्वितीय विश्व युद्ध में लड़ने के लिए ब्रिटिश सेना ने उन्हें मलेशिया भेज दिया। यहां उन्होंने दुश्मनों को हराया। लेकिन 1942 में उन्हें जापान की सेना ने युद्ध में बंदी बना लिया। यहां की जेल में उनका मन बदला और वो ब्रिटिश सेना के ख़लिाफ लड़ने को तैयार हो गए। इसी समय कैप्टन मोहन सिंह आजाद हिंद फौज का गठन कर रहे थे तो उन्होंने आजाद हिंद फ़ौज को ज्वाइन कर लिया। नेताजी सुभाषचंद्र बोस द्वारा आजाद हिंद फौज की कमान संभालने के बाद गुरुबख्श को नेहरू ब्रिगेड का कमांडर बना गया। गुरुबख्श ने वर्ष 2006 में अंतिम सांस ली थी।

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 20-03-2022

'कर्नल ढिल्लो ने अपने कुशल नेतृत्व से अंग्रेजों के छुड़ा दिए थे छक्के'

कॉलेज में महान स्वतंत्रता सेनानी कर्नल ढिल्लो की 108वीं जयंती पर कार्यक्रम

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में महान स्वतंत्रता सेनानी कर्नल गुरुबख्श सिंह ढिल्लो की 108वीं जयंती पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि कर्नल ढिल्लो आजाद हिंद फौज की नेहरू ब्रिगेड के कमांडर थे। जिन्होंने अपने कुशल नेतृत्व से अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए थे। गुरबख्श सिंह ढिल्लो का जन्म 1914 में पंजाब के तरणतारण जिले में हुआ था। उनके पिता एक पशु चिकित्सक थे। गुरबख्श पढ़ने लिखने में तेज थे उनका सपना था कि वो डॉक्टर बनें। परंतु ये इंडियन आर्मी के लिए 1933 में सेलेक्ट हो गए और इन्हें 14वीं पंजाब रेजिमेंट में सेलेक्ट किया गया था। ट्रेनिंग के बाद 1941 में द्वितीय विश्व युद्ध में लड़ने के लिए ब्रिटिश सेना ने उन्हें मलेशिया भेज दिया। यहां उन्होंने दुश्मनों को खूब छकाया लेकिन 1942 में उन्हें जापान की सेना ने युद्ध बंदी बना लिया। यहां की जेल में उनका मन बदला और वो ब्रिटिश सेना के ख़िलाफ लड़ने को तैयार हो गए। इसी समय कैप्टन मोहन सिंह आजाद हिंद फौज का गठन कर रहे थे। गुरुबख्श पहले से ही कैप्टन मोहन सिंह की रेजिमेंट में साथी थे तो उन्होंने आजाद हिंद फ़ौज को जॉइन कर लिया। नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वारा आजाद हिंद फौज की कमान संभालने के बाद गुरुबख्श को नेहरू ब्रिगेड का कमांडर बना दिया गया और यही से गुरबख्श ने कर्नल प्रेम सहगल, और मेजर जनरल शाहनवाज ख़ान के साथ मिलकर ब्रिटिश सेना की नाक में दम कर दिया। जापान द्वारा आत्मसमर्पण करने के बाद 1945 में ब्रिटिश सेना ने इन्हें और आजाद हिंद फ़ौज के दूसरे साथियों के साथ गिरफ़्तार कर लिया। उन पर ब्रिटिश सम्राट के ख़िलाफ युद्ध करने को लेकर 'लाल क़िला ट्रायल' नामक ऐतिहासिक मुक़दमा चलाया गया। इसमें उनके दो साथी प्रेम सहगल, और मेजर जनरल शाहनवाज ख़ान का भी नाम था।

उनकी पैरवी करने वाले वक़ीलों की लिस्ट में भुला भाई देसाई, जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल भी शामिल थे। ये केस एक राष्ट्रीय मुद्दा बन गया था और लोगों का आक्रोश खुलकर अंग्रेजों के सामने आने लगा। इस कार्यक्रम के संरक्षक प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि करोड़ों भारतीयों ने आजादी और उन सैनिकों को आजाद करने के लिए आवाज उठानी शुरू कर दी। जिसका नतीजा ये रहा कि मजबूर ब्रिटिश सरकार को प्रेम सहगल, शाहनवाज ख़ान और गुरबख्श समेत सभी आजाद हिंद फ़ौज के सैनिकों को रिहा करना पड़ा।

adri My City 20

Amar Ujala, Charkhi Dadri 20.03.2022

कुशल नेतृत्व से गुरुबख्श ने छुड़ा दिए थे अंग्रेजों के छक्के : डॉ. अमरदीप

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में महान स्वतंत्रता सेनानी कर्नल गुरुबख्श सिंह ढिल्लों की 108वीं जयंती मनाई गई।

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि कर्नल ढिल्लों आजाद हिंद फौज की नेहरू ब्रिगेड के कमांडर थे, जिन्होंने अपने कुशल नेतृत्व से अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए थे। गुरबख्श सिंह ढिल्लों का जन्म 1914 में पंजाब के तरनतारन जिले में हुआ था। वे इंडियन आर्मी में 1933 में नियुक्त हो गए और इन्हें 14वीं पंजाब रेजिमेंट में तैनात किया गया था। ट्रेनिंग के बाद 1941 में द्वितीय विश्व युद्ध में लड़ने के लिए ब्रिटिश सेना ने उन्हें मलेशिया भेज दिया। यहां की जेल में उनका मन बदला और वे ब्रिटिश सेना के खिलाफ लड़े। नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वारा आजाद हिंद फौज की कमान संभालने के बाद गुरुबख्श को नेहरू ब्रिगेड का कमांडर बना दिया गया। कार्यक्रम के संरक्षक एवं महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. अनीता रानी ने कहा कि 1998 में भारत सरकार ने गुरबख्श सिंह ढिल्लों को देश सेवा के लिए पद्मभूषण से सम्मानित किया था। संवाद

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 20-03-2022

बिरोहड़ में कर्नल गुरुबख्श सिंह ढिल्लों की 108वीं जयंती मनाई

झज्जर | आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी कर्नल गुरुबख्श सिंह ढिल्लों की 108वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष ऑनलाइन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि कर्नल ढिल्लों आजाद हिंद फौज की नेहरू ब्रिगेड के कमांडर थे, जिन्होंने अपने कुशल नेतृत्व से अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए थे। गुरबख्श सिंह ढिल्लों का जन्म 1914 में पंजाब के तरणतारण जिले में हुआ था। उनके पिता एक पशु चिकित्सक थे। गुरबख्श पढ़ने लिखने में तेज थे उनका सपना था कि वो डॉक्टर बनें। परन्तु ये इंडियन आर्मी के लिए 1933 में सेलेक्ट हो गए और इन्हें 14वीं पंजाब रेजिमेंट में सेलेक्ट किया गया था। ट्रेनिंग के बाद 1941 में द्वितीय विश्व युद्ध में लड़ने के लिए ब्रिटिश सेना ने उन्हें मलेशिया भेज दिया। यहां उन्होंने दुश्मनों को खूब छकाया लेकिन 1942 में उन्हें जापान की सेना ने युद्ध बंदी बना लिया।

83. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme in online mode on 95th Anniversary of Mahad Satyagraha on 20.03.2022 and delivered keynote address on "Place and Importance of Mahad Satyagrah in Indian History".

फेयरवल चुना गया। संवाद

विदाई पार्टी में नृत्य करती छात्रा। संवाद

अमर उजाला, चरखी दादरी 21.3.22

महाड़ सत्याग्रह का इतिहास में अद्वितीय स्थान : डॉ. अमरदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने विद्यार्थियों को दी जानकारी

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय की ओर से महाड़ सत्याग्रह की 95वीं वर्षगांठ पर ऑनलाइन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप रहे। उन्होंने कहा कि मानवीय मूल्यों की स्थापना और अधिकार का भाव जागृत करने वाला महाड़ सत्याग्रह इतिहास में अद्वितीय स्थान प्राप्त है। उन्होंने कहा कि 1920 का दशक भारतीय इतिहास का महत्वपूर्ण दौर था। जब असहयोग आंदोलन, खिलाफत आंदोलन, खेड़ा सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा आंदोलन जैसे अनेक आंदोलन अंग्रेजी दास्तां से मुक्ति के लिए चलाए गए। वहीं, 20 मार्च 1927 को डॉ. भीमराव आंबेडकर ने मानव मात्र की स्वतंत्रता, मानवीय मूल्यों एवं सामाजिक अधिकारिता की स्थापना के लिए महाड़ सत्याग्रह का नेतृत्व किया। इसी कारण इस दिन को भारत सरकार के निर्देशानुसार सामाजिक अधिकारिता दिवस के रूप में मनाया जाता है।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 21.03.2022

'महाड़ सत्याग्रह का अद्वितीय स्थान'

जासं, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत रविवार को बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महाड़ सत्याग्रह की 95वीं वर्षगांठ के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संयोजक और मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि मानवीय मूल्यों की स्थापना और अधिकार का भाव जागृत करने वाला महाड़ सत्याग्रह इतिहास में अद्वितीय स्थान प्राप्त है।

1920 का दशक भारतीय इतिहास का महत्वपूर्ण दौर था जब असहयोग आंदोलन, खिलाफत आंदोलन, खेड़ा सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा आंदोलन जैसे कई कदम अंग्रेजी दासता से मुक्ति के लिए चलाए गए। 20 मार्च 1927 को डा. भीमराव आंबेडकर ने मानव मात्र की स्वतंत्रता, मानवीय मूल्यों एवं सामाजिक अधिकारिता की स्थापना के लिए महाड़ सत्याग्रह का नेतृत्व किया। 19 मार्च 1927 को डा. आंबेडकर के नेतृत्व में महाड़ में विशाल जनसभा का आयोजन किया गया और अगले दिन 20 मार्च को डा. आंबेडकर के नेतृत्व में लगभग 5 हजार से अधिक पुरुषों और महिलाओं ने चावदार तालाब तक मार्च किया और पानी पीकर मानवीय समानता और अधिकारिता के कानून को लागू करवाने का प्रयास किया। 25 दिसंबर 1927 को एक नया सत्याग्रह शुरू किया गया।

84. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 91st Death Anniversary of great freedom fighter and revolutionary Master Surya Sen on 21.03.2022 and delivered keynote address on "Life and Struggle of Baba Amte and the Indian Freedom Struggle".

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 22-03-2022

बिरोहड़ के कॉलेज में महान क्रांतिकारी सूर्य सेन को याद किया

चरखी दादरी | गांव बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में महान क्रांतिकारी सूर्य सेन के 128 वें जन्मदिन के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि 1930 की चटगांव आर्मरी रेड के नायक मास्टर सूर्यसेन ने अंग्रेज सरकार को सीधी चुनौती दी थी। उन्होंने अपने साथियों के साथ मिलकर चटगांव को अंग्रेजी हुकूमत के शासन के दायरे से बाहर कर लिया था और भारतीय ध्वज को पहराया था। उन्होंने न केवल क्षेत्र में ब्रिटिश हुकूमत की संचार सुविधा ठप कीं बल्कि रेलवे, डाक और टेलीग्राफ सब संचार एवं सूचना माध्यमों को ध्वस्त करते हुए चटगांव से अंग्रेज सरकार के संपर्क तंत्र को ही खत्म कर दिया था। स्वाधीनता आंदोलन के अमर नायक सूर्यसेन उर्फ सुरज्या सेन का जन्म 22 मार्च, 1894 को हुआ था। पेशे से शिक्षक रहे बंगाल के इस नायक को लोग सूर्यसेन कम मास्टर दा कहकर ज्यादा पुकारते थे। 22 वर्ष की आयु में सूर्यसेन बंगाल की प्रमुख क्रांतिकारी संस्था अनुशीलन समिति के सदस्य बने और इसके बाद वे प्रसिद्ध क्रांतिकारी संगठन युगांतर से जुड़े। वर्ष 1918 में चटगांव वापस आकर उन्होंने युवाओं को संगठित करने के लिए युगांतर पार्टी की स्थापना की।

85. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 91st Shahidi Diwas 22.03.2022 and delivered keynote address on "Shaheed Bhagat Singh, Rajguru & Sukhdev: Their Ideology and Legacy".

दैनिक भास्कर चरखी दादरी 23-03-2022

भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव ने ब्रितानी हुकूमत के ताबूत में ठोकी थी कीलें

बिरोहड़ कॉलेज में 91वें शहीदी दिवस के अवसर पर हुआ कार्यक्रम

भास्कर न्यूज चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में 91वें शहीदी दिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि 23 मार्च 1931 को शहीद भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव तीनों देशभक्तों ने फांसी के फंदा ही नहीं चूमा था नहीं बल्कि ब्रितानी हुकूमत के ताबूत में कीलें ठोकी थी। ब्रितानी हुकूमत इन तीनों देशभक्तों से इतना डर गई थी उनको 11 घंटे पहले 24 मार्च की बजाय 23 मार्च को फांसी देनी पड़ी थी। भगत सिंह ने कहा था कि ब्रिटिश सरकार उन्हें मार सकती है परंतु उनकी विचारधारा को नहीं। भगत सिंह ने न केवल भारतीय आजादी की वकालत की थी, बल्कि वे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद से आजादी की बात करते थे। भगत सिंह और उनके साथिओं ने क्रांतिकारी आंदोलन का नवीन स्वरुप प्रदान किया। अब क्रांति केवल बम और पिस्तौल की राजनीति नही बल्कि संगठित विचारों और उदारवादी विचारधारा का प्रवाह बन गई थी। प्राध्यापक जितेन्द्र ने कहा कि हम आज जिस आजाद भारत में रह रहे है। यह महान क्रांतिकारियों और महान् स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदानों के फलस्वरूप संभव हो सका है। प्राध्यापक पवन कुमार ने कहा कि हम अपना सब कुछ न्यौछावर करके भी भगत सिंह और उनके क्रांतिकारी साथियों का ऋण नहीं चुका सकते हैं। प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि कहा भगतसिंह को शहीद ए आजम का दर्जा उन्हें उनकी महान सोच एवं विचारधारा तथा सब कुछ न्योछावर करने की भावना के कारण दिया जाता है। राजगुरु और सुखदेव ने देश के लिये अपने प्राणों की आहुति देकर महान बलिदानियों में अपना नाम शुमार करवाया था जो आज हर युवा के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में शहीदी दिवस को लेकर आयोजित गोष्ठी को संबोधित करते वक्ता।

86. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 112nd Birth Anniversary of great freedom fighter Ram Manohar Lohia on 24.03.2022 and delivered keynote address on "Role of Ram Manohar Lohia in the Indian Freedom Struggle".

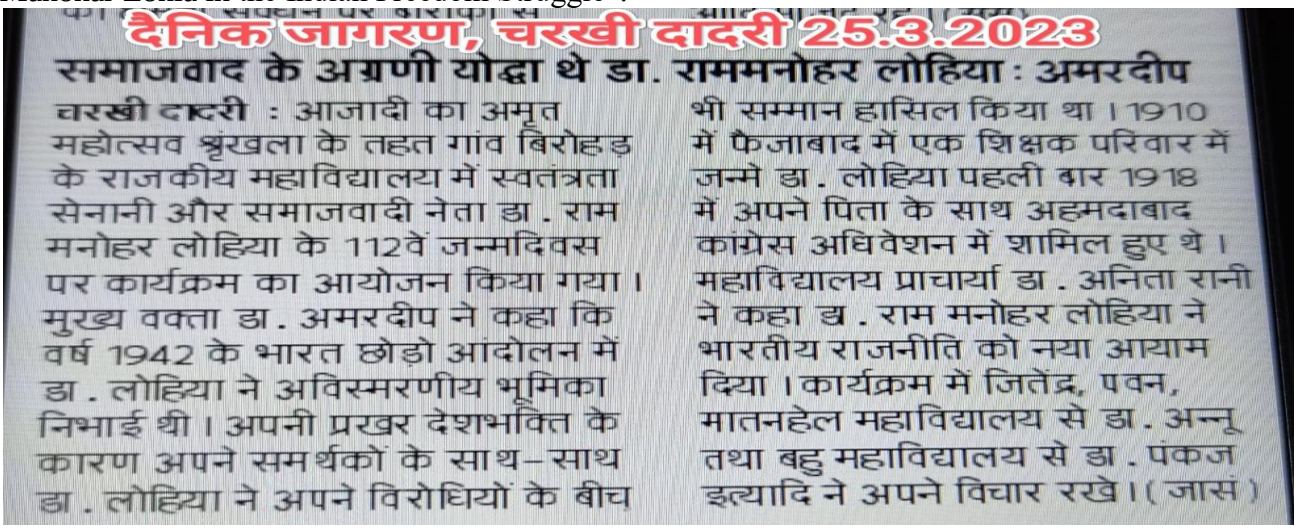

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 25.3.2023

समाजवाद के अग्रणी योद्धा थे डा. राममनोहर लोहिया : अमरदीप

चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में स्वतंत्रता सेनानी और समाजवादी नेता डा. राम मनोहर लोहिया के 112वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि वर्ष 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में डा. लोहिया ने अविस्मरणीय भूमिका निभाई थी। अपनी प्रखर देशभक्ति के कारण अपने समर्थकों के साथ-साथ डा. लोहिया ने अपने विरोधियों के बीच भी सम्मान हासिल किया था। 1910 में फैजाबाद में एक शिक्षक परिवार में जन्मे डा. लोहिया पहली बार 1918 में अपने पिता के साथ अहमदाबाद कांग्रेस अधिवेशन में शामिल हुए थे। महाविद्यालय प्राचार्या डा. अनिता रानी ने कहा डा. राम मनोहर लोहिया ने भारतीय राजनीति को नया आयाम दिया। कार्यक्रम में जितेंद्र, पवन, मातनहेल महाविद्यालय से डा. अन्नू तथा बहु महाविद्यालय से डा. पंकज इत्यादि ने अपने विचार रखे। (जासं)

87. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 92nd Death Anniversary of great freedom fighter and revolutionary Shyamaji Krishna Varma on 31.03.2022 and delivered keynote address on "Life and Struggle of Shyamaji Krishan Verma and Indian Freedom Struggle".

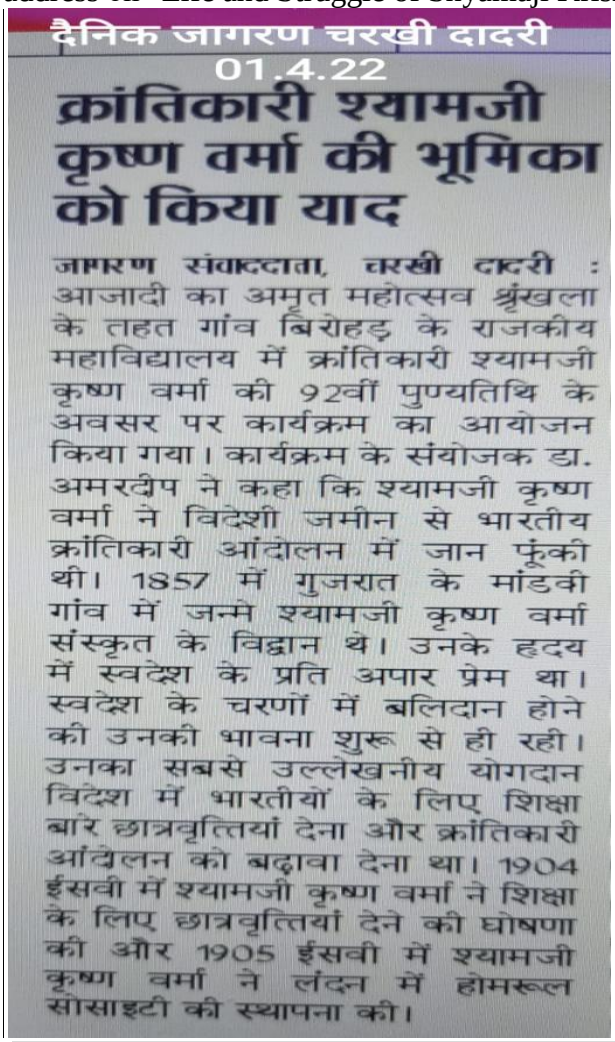

दैनिक जागरण चरखी दादरी

01.4.22

क्रांतिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा की भूमिका को किया याद

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में क्रांतिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा की 92वीं पुण्यतिथि के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि श्यामजी कृष्ण वर्मा ने विदेशी जमीन से भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन में जान फूंकी थी। 1857 में गुजरात के मांडवी गांव में जन्मे श्यामजी कृष्ण वर्मा संस्कृत के विद्वान थे। उनके हृदय में स्वदेश के प्रति अपार प्रेम था। स्वदेश के चरणों में बलिदान होने की उनकी भावना शुरू से ही रही। उनका सबसे उल्लेखनीय योगदान विदेश में भारतीयों के लिए शिक्षा बारे छात्रवृत्तियां देना और क्रांतिकारी आंदोलन को बढ़ावा देना था। 1904 ईसवी में श्यामजी कृष्ण वर्मा ने शिक्षा के लिए छात्रवृत्तियां देने की घोषणा की और 1905 ईसवी में श्यामजी कृष्ण वर्मा ने लंदन में होमरूल सोसाइटी की स्थापना की।

88. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 131st Birth Anniversary of great freedom fighter T.B. Kunha on 02.04.2022 and delivered keynote address on "Role of TB Kunha in Freedom Movement of Goa".

चरखी दादरी भास्कर 03-04-2022

गोवा की आजादी में डॉ. टीबी कुन्हा ने निभाई थी महत्वपूर्ण भूमिका

राजकीय कॉलेज में स्वतंत्रता सेनानी के 131वीं पुण्यतिथि पर कार्यक्रम

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में स्वतंत्रता सेनानी और क्रांतिकारी डॉ. टीबी कुन्हा के 131वें जन्मदिवस वीं पुण्यतिथि के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप कहा कि डॉ. टीबी कुन्हा ने गोवा की आजादी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। 2 अप्रैल 1891 में गोवा के चंदौर नामक गांव में जन्मे डॉ. कुन्हा की शिक्षा पणजी, पुंडूचेरी और पेरिस से पूरी हुई थी। पेरिस में ही इन्होंने एक निजी फर्म में 1916 से 1926 तक कार्य किया।

इसी दौरान ब्रिटिश सरकार के शोषण का काला चिट्ठा दुनिया के सामने रखा जिसमें सबसे महत्वपूर्ण जलियांवाला बाग नरसंहार की खबरों को पूरे विवरण के साथ यूरोप के पत्रों में प्रकाशित करवाया जिन्हें ब्रिटिश सरकार ने दबा दिया था। 1926 में भारत लौटने पर डॉ. कुन्हा ने 'गोवा कांग्रेस कमेटी' की स्थापना की। उन्होंने गोवा के दमनकारी शासन के विरोध में अनेक पुस्तिकाएं लिखीं।

जून 1946 में मडगांव में डॉ. राम मनोहर लोहिया के सार्वजनिक भाषण से गोवा की पुर्तगाल से मुक्ति का खुला संघर्ष आरंभ हुआ। 24 जुलाई 1948 को डॉ. कुन्हा गिरफ्तार कर लिए गए। उन पर सैनिक अदालत में मुक़दमा चला और 8 वर्ष की कैद की सजा देकर उन्हें पुर्तगाल के एक क़िले में बंद कर दिया गया।

1950 में आम रिहाई के समय यद्यपि उन्हें भी जेल से छोड़ दिया गया था, पर भारत वे 1953 में ही आ सके। प्राचार्या डा. अनीता रानी ने कहा कि डॉ. कुन्हा ने आखिरी सांस तक पुर्तगाली साम्राज्यवाद एवं शोषण का विरोध किया और गोवा की आजादी के लिए उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन न्योंछावर कर दिया।

रविवार • 03.04.2022 amarujala.com 03

AMAR UJALA, CHARKHI DADRI 03.04.2022

डॉ. कुन्हा ने पुर्तगाली साम्राज्यवाद का किया विरोध : अनीता

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में स्वतंत्रता सेनानी डॉ. टीबी कुन्हा की पुण्यतिथि पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में प्राचार्या अनीता रानी भी मौजूद रहीं। इतिहास विभाग के अध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि डॉ. टीबी कुन्हा ने गोवा की आजादी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। दो अप्रैल 1891 में गोवा के चंदौर नामक गांव में जन्मे डॉ. कुन्हा की शिक्षा पणजी, पांडिचेरी और पेरिस से पूरी हुई थी। पेरिस में ही इन्होंने एक निजी फर्म में 1916 से 1926 तक कार्य किया। इसी दौरान ब्रिटिश सरकार के शोषण का काला चिट्ठा दुनिया के सामने रखा, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण जलियांवाला बाग नरसंहार की खबरों को पूरे विवरण के साथ यूरोप के पत्रों में प्रकाशित करवाया। प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि डॉ. कुन्हा ने आखिरी सांस तक पुर्तगाली साम्राज्यवाद एवं शोषण का विरोध किया। संवाद

89. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 114th Birth Anniversary of great freedom fighter Babu Jagjivan Ram on 05.04.2022 and delivered keynote address on "Role of Babu Jagjivan Ram in Freedom Struggle and in the Making of Modern India".

प्रशिक्षण दिया गया। हरपाल आर्य ने हिंदी, रामचंद्र इदारा ने प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र

अमर उजाला, चरखी दादरी 06.04.2022

बाबू जगजीवन राम की आजाद भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका : डॉ. अमरदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में स्वतंत्रता सेनानी बाबू जगजीवन राम के 114वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने की। उन्होंने बाबू जगजीवन राम के बारे में जानकारी दी।

इतिहास विभाग के अध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने बताया कि बाबू जगजीवन राम की ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम और आजादी के बाद भारत निर्माण में उल्लेखनीय भूमिका थी। पांच अप्रैल 1908 को बिहार के गांव चंदवा में जन्मे जगजीवन राम प्रारंभ से ही मेधावी छात्र थे और जातीय भेदभाव का सामना करते हुए उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से इंटर साइंस की परीक्षा पास की। इसके बाद कोलकाता विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेकर उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ संघर्ष किया। आजादी के बाद जगजीवन राम लंबे समय तक केंद्रीय सरकार में मंत्री रहे और मंत्रालय में अपनी प्रशासनिक दक्षता का परिचय देकर अनेक सुधार किए। 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के समय जगजीवन राम रक्षा मंत्री थे। इस युद्ध में विजय दिलाने और बांग्लादेश के निर्माण उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

90. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 93rd Anniversary of Delhi Assembly Bomb Blast on 08.04.2022 and delivered keynote address on "Central Legislative Assembly Bomb Incidence: Importance in the Indian Freedom Struggle".

Amar Ujala, Charkhi Dadri 09:04.2022

कार्यक्रम — दिल्ली सेंट्रल असेंबली बम कांड की 93वीं वर्षगांठ पर बिरोहड़ राजकीय कॉलेज में आयोजित किया गया सेमिनार

सेंट्रल असेंबली में विस्फोट ने बदला था आंदोलन का रुख

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में दिल्ली सेंट्रल असेंबली हॉल में बम विस्फोट की 93वीं वर्षगांठ पर सेमिनार आयोजित किया गया। इसमें प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने विद्यार्थियों को इस विषय में विस्तार से जानकारी दी। दिल्ली सेंट्रल असेंबली हॉल में बम विस्फोट की घटना ने भारत की आजादी के आंदोलन का रुख ही बदल दिया।

वहीं, इतिहास प्राध्यापक जितेंद्र ने कहा कि भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त के दिल्ली सेंट्रल असेंबली हॉल में बम विस्फोट करने का उद्देश्य किसी की हत्या नहीं, बल्कि भ्रष्ट और सुप्त ब्रिटिश सरकार को सावधान करना था। इसलिए उन्होंने कहा था कि बहरे को सुनाने के लिए धमाके की जरूरत होती है। डॉ. अमरदीप ने कहा कि 8 अप्रैल 1929 को भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने दुनिया के समाने मिसाल रखी कि क्रांतिकारी देश के हिंसक अपराधी नहीं, बल्कि ब्रिटिश हुकूमत को जगाने वाले आजादी के दीवाने थे। इस बम विस्फोट घटना ने न केवल अंग्रेजी हुकूमत को ही नहीं हिलाया, बल्कि लाखों युवाओं में आजादी एवं राष्ट्रीयता की सर्वोच्च भावना पैदा की।

सरूपगढ़ स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में मौजूद विद्यार्थी व शिक्षक। संवाद

देश की आजादी के पहले महानायक थे मंगल पांडे : जोगेंद्र

चरखी दादरी। गांव सरूपगढ़- सांतौर स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में महान क्रांतिकारी मंगल पांडे की पुण्य तिथि मनाई गई।

प्राचार्य जोगेंद्र गुलिया ने बताया कि ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के पहले क्रांतिकारी मंगल पांडे ने मारो फिरंगी का नारा देकर सबका साहस बढ़ाया। प्रवक्ता बिजेंद्र ने कहा कि जब उस समय भारतीय सैनिकों को नई एनफिल्ड राइफलें दी गई तो उस पर चर्बी का लेप लगा होता था। सैनिकों के बीच अफवाह फैल गई यह चर्बी गाय या सूअर के मांस से निर्मित है।

मंगल पांडे की शहादत से उठे तूफान के चलते अंग्रेज भयभीत हो उठे। मंगल पांडे ने जो स्वतंत्रता के लिए राह दिखाई उस पर कई आंदोलन हुए और देश आजाद हुआ। इस अवसर पर प्रवक्ता राकी, कृष्ण कुमार, रविंद्र, प्रवीन सैनी, नवदीप, प्रवीन, संगीता, रुचिका, स्नेह, सुरेश बाला, ललिता आदि उपस्थित रहे। संवाद

दैनिक भास्कर — **चरखी दादरी भास्कर 09-04-2022**

शहीदों ने ब्रिटिश सरकार को किया था सावधान : प्राध्यापक जितेन्द्र

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में दिल्ली सेंट्रल असेंबली हॉल में बम विस्फोट की 93वीं वर्षगांठ पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि 8 अप्रैल 1929 को भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने दुनिया के समाने मिसाल रखी कि क्रांतिकारी देश के हिंसक अपराधी नहीं बल्कि ब्रिटिश हुकूमत को जगाने वाले आजादी के दीवाने थे।

प्राध्यापक जितेन्द्र ने कहा कि भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने दिल्ली सेंट्रल असेंबली हॉल में बम विस्फोट के माध्यम से किसी की हत्या नही बल्कि भ्रष्ट और सुसुप्त ब्रिटिश सरकार को सावधान करना था। प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि दिल्ली सेंट्रल असेंबली हॉल में बम विस्फोट की घटना ने भारत की आजादी के आंदोलन का रुख ही बदल दिया।

91. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 195th Birth Anniversary of Social reformer Jyotiba Phule on 11.04.2022 and delivered keynote address on "Jyotiba Phule: A Social Crusader and Making of Modern India".

आर्य, दीपिका, मुस्कान, अन्नु, मनसा, जयश्री, सुप्रिता, सीनू, ममता, ज्योति व सरीति आदि का सराहनीय परिणाम रहे। बीमारियों से बचने के लिए योग बहुत ज

Amar Ujala Charkhi Dadri 12.04.2022

'भारतीय नवजागरण के अद्वितीय योद्धा ज्योतिबा फुले'

महात्मा ज्योतिबा फुले जयंती पर बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में कार्यक्रम

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक महात्मा ज्योतिबा फुले के जन्मदिवस पर उनको नमन किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि ज्योतिबा फुले भारतीय नवजागरण के अद्वितीय योद्धा थे। ज्योतिबा फुले ने देश में मानव मात्र को सामाजिक न्याय देने के लिए संघर्ष करने का संकल्प लिया और आजीवन इस महान कार्य में लगे रहे। 1827 में पुणे में जन्मे ज्योतिबा फुले ने जातीय भेदभाव को अपनी ताकत बनाकर इस घृणित भावना को समाप्त करने का कार्य किया। इसके लिए उन्होंने सबसे अधिक शिक्षा पर जोर दिया। 1848 में ज्योतिबा ने अपनी पत्नी सावित्रीबाई तथा फातिमा शेख के सहयोग से देश में शूद्र लड़कियों के लिए पहले स्कूल की स्थापना की। 1851 में सभी जाति की कन्याओं के लिए एक अन्य स्कूल की स्थापना की।

बिरोहड़ राजकीय कॉलेज में विद्यार्थियों को जानकारी देते प्रवक्ता। विज्ञप्ति

भूगोल प्राध्यापक पवन कुमार ने कहा कि ज्योतिबा फुले ने 1855 में कामगार लोगों के लिए रात्रि पाठशाला खोलकर शिक्षा के विकास में विलक्षण अध्याय की शुरुआत की। वे बाल विवाह के विरोधी और विधवा पुनर्विवाह के समर्थक थे। इतिहास प्राध्यापक अजय सिंह ने कहा कि ज्योतिबा फुले को सामाजिक न्याय के प्रति उनके संघर्ष को देखते हुए 1888 में उन्हें महात्मा की उपाधि दी गई। कार्यक्रम की संरक्षक महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि ज्योतिबा ने सामाजिक समानता की मुहिम में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 12-04-2022

फुले ने सबसे अधिक शिक्षा पर जोर दिया

राजकीय कॉलेज में फुले के 195वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम का आयोजन

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक महामना महात्मा ज्योतिबा फुले के 195वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि ज्योतिबा फुले भारतीय नवजागरण के अद्वितीय योद्धा थे। ज्योतिबा फुले देश में मानव मात्र को सामाजिक न्याय देने के लिए संघर्ष करने का संकल्प लिया और आजीवन इस महान कार्य में लगे रहे। 1827 में पुणे में जन्मे ज्योतिबा फुले ने जातीय भेदभाव को अपनी ताकत बनाकर पूरे भारत को इस घृणित भावना को समाप्त करने का कार्य किया। इसके लिए उन्होंने सबसे अधिक शिक्षा पर जोर दिया। 1848 में उन्होंने अपनी पत्नी सावित्रीबाई तथा फातिमा शेख के सहयोग से भारत में शूद्र अतिशूद्र लड़कियों के लिए पहले स्कूल की स्थापना की और 1851 में सभी जाति की कन्याओं के लिए एक अन्य स्कूल की स्थापना की। प्राध्यापक पवन कुमार ने कहा कि ज्योतिबा फुले ने 1855 में कामगार लोगों के लिए रात्रि पाठशाला खोलकर शिक्षा के विकास में विलक्षण अध्याय की शुरुआत की। वे बाल विवाह के विरोधी और विधवा पुनर्विवाह के समर्थक थे। प्राध्यापक अजय सिंह ने कहा कि ज्योतिबा फुले को सामाजिक न्याय के प्रति उनके संघर्ष को देखते हुए 1888 में उन्हें महात्मा की उपाधि दी गई। प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि 1873 में 'गुलामगिरी' प्रकाशित करके उन्होंने सामाजिक समानता के मुहीम में महत्वपूर्ण योगदान दिया और साथ ही 1873 में 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना करके मानव मात्र को सत्य खोजने और अंधविश्वास को समाप्त करने के लिए आंदोलनरत करने का प्रयत्न किया।

92. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 103rd Anniversary of Jallianwala Bagh Massacre on 12.04.2022 and delivered keynote address on "Jallianwala Bagh: A turning point in Indian Freedom Struggle."

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 13.4.2022

जलियांवाला बाग नरसंहार से अंग्रेजों का क्रूर चेहरा हुआ उजागर : डा. अमरदीप

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में मंगलवार को जलियांवाला बाग नरसंहार की 103वीं वर्षगांठ के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि जलियांवाला बाग नरसंहार ने अंग्रेजी राज का क्रूर और दमनकारी चेहरा दुनिया के सामने रखा और भारत में अंग्रेजी राज के नैतिकता एवं वरदान के दावे को भी झूठला दिया तथा साथ ही व्यापक रूप से भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को महत्वपूर्ण मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया। इतिहास प्राध्यापक जितेंद्र, प्राध्यापक पवन कुमार, प्राध्यापक अजय सिंह, महाविद्यालय प्राचार्या डा. अनिता रानी ने कहा कि ब्रिटिश शासन से स्वतंत्र होने के 14 साल बाद 1961 में जलियांवाला बाग में शहीदों के लिए एक स्मारक का निर्माण किया गया जो आज भी हर भारतीय के लिए प्रेरणास्रोत है।

सरकारी कालेज में बच्चों को जलियावाला बाग घटना के बारे में बताते प्रोफेसर। • विज्ञप्ति।

अमर उजाला, चरखी दादरी 13.04.2022

जलियांवाला बाग नरसंहार ने दुनिया के सामने रखा अंग्रेजी राज का दमनकारी चेहरा : प्राचार्य

103वीं वर्षगांव पर बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में कार्यक्रम आयोजित

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में जलियांवाला बाग नरसंहार की 103वीं वर्षगांठ पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की संरक्षक एवं प्राचार्य डॉ. अनीता रानी ने कहा कि जलियांवाला बाग की घटना ने देश की आजादी के आंदोलन को तेज किया।

बिरोहड़ राजकीय कॉलेज में एमए इतिहास की छात्रा विचार रखती। विज्ञप्ति

उन्होंने कहा कि जलियांवाला बाग नरसंहार ने अंग्रेजी राज का दमनकारी चेहरा दुनिया के सामने रखा और देश में अंग्रेजी राज के नैतिकता एवं वरदान के दावे को भी झुठला दिया। एमए इतिहास की छात्रा प्रियंका शर्मा ने कहा कि इसी आंदोलन ने महात्मा गांधी को राष्ट्रीय नेता के रूप में स्थापित किया और देश के अधिकांश शहरों में 30 मार्च और छह अप्रैल को देशव्यापी हड़ताल का आह्वान किया गया। इतिहास प्राध्यापक जितेंद्र ने कहा कि इस दौरान अंग्रेजों ने महात्मा गांधी को पंजाब में घुसने नहीं दिया गया और पलवल में गिरफ्तार करके वापस भेज दिया गया। भूगोल प्राध्यापक पवन कुमार ने कहा कि 13 अप्रैल शाम साढ़े चार बजे जनरल डायर ने जलियांवाला बाग में बिना किसी पूर्व चेतावनी के हजारों लोगों पर गोलियां बरसाने का आदेश दे दिया। गोलीबारी में सैनिकों ने करीब 1650 राउंड गोलियां चलाईं। अंग्रेजी सरकार ने इस घटना पर पर्दा डालने के लिए केवल 379 लोगों को मृत माना, जबकि हजारों लोगों की जान गई थी। इस मौके पर कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप व इतिहास प्राध्यापक अजय सिंह भी मौजूद रहे।

चरखी दादरी भास्कर 13-04-2022

'जलियांवाला बाग में चलाई गई थी करीबन 1650 राउंड गोलियां'

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में जलियांवाला बाग़ नरसंहार की103वीं वर्षगांठ एक कार्यक्रम का आयोजन

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में जलियांवाला बाग़ नरसंहार की 103वीं वर्षगांठ एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि जलियांवाला बाग़ नरसंहार ने अंग्रेजी राज के क्रूरतम और दमनकारी चेहरा दुनिया के सामने रखा। भारत में अंग्रेजी राज के नैतिकता एवं वरदान के दावे को भी झुठला दिया तथा साथ ही व्यापक रूप से भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया।

1919 के रॉलेट बिल का सर्वाधिक विरोध पंजाब में हुआ और धीरे धीरे रॉलेट एक्ट के ख़िलाफ़ भारत का पहला अख़िल भारतीय आंदोलन प्रारंभ हुआ। एमए इतिहास की छात्रा प्रियंका शर्मा ने कहा कि इसी आंदोलन ने महात्मा गांधी को राष्ट्रीय नेता के रूप में स्थापित किया और देश के अधिकांश शहरों में 30 मार्च और 6 अप्रैल को देशव्यापी हड़ताल का आह्वान किया गया। प्राध्यापक जितेन्द्र ने कहा कि किसी भी विरोध को कुचलने के लिए हमेशा आतुर रहने वाले पंजाब के गवर्नर डायर ने अमृतसर के लोकप्रिय नेताओं डॉ. सत्यपाल और सैफ़ुद्दीन को अमृतसर से निर्वासित करने का फ़ैसला किया और महात्मा गांधी को भी पंजाब में घुसने नहीं दिया गया और पलवल में गिरफ्तार करके वापस भेज दिया गया। प्राध्यापक अजय सिंह ने कहा कि करीब दस मिनट की गोलीबारी में सैनिकों ने क़रीब 1650 राउंड गोलियां चलाईं।

अंग्रेजी सरकार ने इस घटना पर पर्दा डालने के लिए केवल 379 लोगों को मृत माना जबकि भारतीय नेताओं में रिपोर्ट में एक हज़ार से ज्यादा लोगों की मृत्यु इस नरसंहार में हुई थी। प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि जलियांवाला बाग़ की इस घटना ने भारत की आज़ादी के आंदोलन को तेज किया और आजादी की नींव मजबूत कर दी।

93. Dr. Amardeep was invited as Keynote Speaker in Govt. College Bahu, Jhajjar on the occasion of 91st Death Anniversary of great freedom fighter and social reformer Baba Saheb Dr. Bhimrao Ambedkar on 13.04.2022 and delivered keynote address on "Life and Struggle of Baba Amte and the Indian Freedom Struggle".

विशाखा
रंजन ने
व द्वितीय

अमर उजाला, झज्जर 14.04.2022

तिथि। संवाद

डॉ. आंबेडकर की जयंती पर हुआ व्याख्यान

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बहू में इतिहास विभाग की तरफ से डॉ भीमराव आंबेडकर जयंती के उपलक्ष में और जलियांवाला बाग हत्याकांड की 103 वीं वर्षगांठ पर एक व्याख्यान का आयोजन किया गया।

मुख्य वक्ता राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बिरोहड़ के इतिहास विभाग के अध्यक्ष और प्रोफेसर डॉ अमरदीप रहे। उन्होंने बताया कि डॉ आंबेडकर ने छुआछूत के विरुद्ध एक व्यापक एवं सक्रिय आंदोलन चलाया।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ जितेंद्र कुमार भारद्वाज ने सभागार में उपस्थित श्रोताओं को बताया कि बाबा साहब भीमराव अंबेडकर के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए और समाज में फैली अव्यवस्थाओं के प्रति सदैव सजग रहने को के लिए प्रेरित किया। इस समारोह के समंवयक नरेंद्र कुमार रहे और संयोजक आदित्य गोयल रहे। इस अवसर पर वाणिज्य विभागाध्यक्ष डॉ मोहन कुमार, अर्थशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ सुनील कुमार, हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ सुखबीर सिंह, भूगोल विभागाध्यक्ष डॉ पंकज, कुलबीर सिंह, डॉ. रविंद्र सिंह, पूजा शर्मा, रेखा बाई, डॉ चंद्रभान, मीडिया प्रभारी कुमारी मोनिका आदि स्टाफ सदस्य मौजूद रहे।

डॉ आंबेडकर की जयंती पर व्याख्यान करते वक्ता। संवाद

जलियांवाला बाग के शहीदों को श्रद्धांजलि दी

झज्जर। शहर के किडज शैशव स्कूल और वैदिक गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल में जलियांवाला बाग हत्याकांड की याद में बच्चों ने मौन धारण कर शहीदों को श्रद्धांजलि दी। स्कूल की प्राचार्या उषा गहलोत ने इस घटना को याद करते हुए बच्चों को बताया कि हमारे इतिहास में ऐसे अनेक देशभक्तों और शुरवीरों का बलिदान छुपा है जिससे हमें प्रेरणा लेनी चाहिए। आज हमें उन शहीदों को याद करना चाहिए और उनका शुक्रिया अदा करना चाहिए जिनकी शहादत के कारण हमें आजादी प्राप्त हुई। उन्होंने कहा कि हमें भी अपने देश के अच्छे नागरिक बनना चाहिए । संवाद

94. The P.G. Department of History, Dept. of English and Dept. of Political Science jointly organized a special programme in Govt. College Birohar, Jhajjar on the occasion of 131st Birth Anniversary of great freedom fighter Baba Saheb Dr. Bhimrao Ambedkar on 13.04.2022.

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 14-04-2022

भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर के 131वें जन्मदिवस पर सेमिनार का आयोजन किया

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास, अंग्रेजी एवं राजनीति विज्ञान विभाग के सयुंक्त तत्वावधान में बाबा साहेब भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर के 131वें जन्मदिवस के अवसर पर एक विशेष सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की संरक्षिका और महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि डॉ. अम्बेडकर ने समाज का निर्माण स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे के सिद्धांतों पर आधारित करने पर जोर दिया।

उन्होंने भारत से जाति की समाप्ति करके हर भारतीय को राष्ट्रीयता एवं एकता के सूत्र में बांधने जोर दिया। कार्यक्रम के संयोजक अंग्रेजी के एसोसिएट प्रोफेसर राजेश कुमार ने कहा कि डॉ. अम्बेडकर सामाजिक समरसता के मसीहा है और आजीवन वे इसकी स्थापना के लिए संघर्षरत रहे। उनका जीवन हर भारतीय को एक श्रेष्ठ भारत के निर्माण के लिए अपना समुचित योगदान देने के लिए प्रेरित करता है। डॉ. सुरेन्द्र सिंह, सहायक प्रोफेसर ने कहा कि डॉ. अम्बेडकर ने भारत के लिए अपना जीवन न्योच्छावर किया और उन्होंने कहा था कि हम सबसे पहले और अंत में केवल और केवल भारतीय है, अन्य कोई पहचान नहीं है। इतिहास प्राध्यापक सवीन ने कहा कि अम्बेडकर किसी समाज या समुदाय विशेष के खिलाफ नहीं थे, जैसा की आजकल गुमराह करने के लिए दर्शाया जाता है बल्कि उन्होंने हर व्यक्ति मात्र के लिए नेसर्गिक अधिकारों की वकालत की। इस अवसर पर महाविद्यालय के समस्त स्टाफ ने बाबा साहेब की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करके उन्हें श्रद्धांजलि दी।

बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती पर आयुष चिकित्सा शिविर आज : आजादी के अमृत महोत्सव शृंखला में बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती के अवसर पर आयुष विभाग द्वारा 14 अप्रैल को झज्जर की सीता राम गेट स्थित वाल्मीकि धर्मशाला व पुराने बस स्टैंड के समीप जाटव धर्मशाला में निशुल्क आयुष चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जाएगा। जिला आयुर्वेदिक अधिकारी डॉ. मुकेश गोस्वामी ने बताया कि यह शिविर 14 अप्रैल गुरुवार की सुबह प्रात 9 बजे से तीन बजे तक आयोजित होंगे। शिविर में आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा आदि के माध्यम से लोगों को स्वास्थ्य लाभ दिया जाएगा। शिविर में आने वाले मरीजों को दवाएं भी निशुल्क वितरित की जाएंगी।